PARIVARTAN
परिवर्तन

उद्देश्य, क्षमता, साझेदारी

वार्षिक प्रतिवेदन 2022-23

विषय सूची

01 संस्थापक का संदेश 1
02 अंतर्राष्ट्रीय युवा दिवस 2
03 शिक्षक दिवस 3
04 अंतर्राष्ट्रीय साक्षरता दिवस 4
05 बाल दिवस 5
06 पोषण जागरूकता कार्यक्रम 7
07 ग्रामीण विसर्जन कार्यक्रम (आर आई पी) 8
08 गणतंत्र दिवस 9
09 परिवर्तन एवं स्पिक मैके की साझेदारी 10
10 क्षमता संवर्धन कार्यशालाएं 11
11 कृषि 12
12 शिक्षा 14
13 सामुदायिक खेल/उमंग 23
14 सामुदायिक रंगमंच/रंगमंडली 27
15 जागृति महिला समाख्या 29
16 आजीविका 31
17 हथकरघा दिवस 33
18 बिहार शिक्षा परियोजना सिवान चहक 34
19 टीम की ओर से संदेश; गाँव में परिवर्तन 35
20 परिवर्तन के प्रकाशन 36
21 ओर्गानोग्राम (परिवर्तन टीम) 37

संस्थापक का संदेश

परिवर्तन की परिकल्पना करते वक़्त कभी अनुमान नहीं लगा पाया था कि भविष्य में इसमें इतने आयाम जुड़ते चले जाएँगे। शिक्षा, कृषि, रंगमंच, महिला समाख्या और खेल इकाई से हुई शुरुआत में हम रोज़गार के अवसर भी उपलब्ध करवाने के प्रयासों में लग जाएँगे; कला एवं संस्कृति के पुनरुत्थान से जुड़े अनेक कार्यक्रमों को परिसर में सम्पन्न कर पाएँगे; देश भर के कलाकार, बुद्धिजीवी, विचारक एवं रंगकर्मी इस परिसर में आकर ग्रामीणों के संग रहकर,उनकी ही बातों को कहेंगे, सुनेंगे और नई उत्साही, विकासशील अवधारणाओं का निर्माण करने लगेंगे। हम असफलताओं से भरी कृषि की कहानी को उलट कर सफलता की इबारत लिखने लग जाएँगे और इस तरह ग्रामीण विकास के स्वप्न को सच्चे अर्थों में जमीन पर घटित होते हुए देख पाएँगे।

परिवर्तन की कथा यात्रा में वर्ष 2023 ने अनेक चैप्टर जोड़े। हर इकाई ने अपने -अपने स्तर पर नए कार्यक्रमों को सफलतापूर्वक लागू करने का प्रयास किया। शिक्षा इकाई ने जहाँ नवाचार का पालन कर कला एवं कथा-कहानी के माध्यम से सभी हाशिये के बच्चों तक सजीव एवं डिजिटल माध्यमों से पहुँचने का प्रयास किया तो रंगमंडली के सदस्यों ने बड़े तथा छोटे नाटकों को राज्य स्तरीय एवं राष्ट्र स्तरीय मंचों पर प्रदर्शित कर बड़े दर्शक समूहों की वाह वाही प्राप्त की। महिला समाख्या की सदस्यों ने गाँव -गाँव का दौरा कर अनेक नई महिलाओं को अपने जागरूकता कार्यक्रम का हिस्सा बनाया और वार्ड एवं पंचायत बैठकों में उनकी उपस्थति सुनिश्चित की। रोज़गार इकाई से जुड़ी महिलाओं के बुने और सिले कपड़ों ने व्यापक प्रशंसा ही नहीं बटोरी अपितु अनेक ऑर्डर भी बटोरे। उनके द्वारा तैयार की गई साड़ियाँ और कुरते पायजामे की ख्याति अब देश के सुदूर कोनों तक पहुँच चुकी है। विलुप्त हो रहे हथकरघा उद्योग में इससे प्राण का संचार हुआ है और क्षेत्र को नई प्रतिष्ठा मिली है। परिसर में बने मिट्टीशिल्प के बर्तनों को एस्थेटिक्स के बाज़ार में अत्यंत सराहनीय फीडबैक मिला है। इनसे हमें सबलता मिली और विकास का हमारा कार्यक्रम और मज़बूत हुआ है।

इस वर्ष खेल इकाई उमंग ने क्षेत्र में नए प्रतिमान रचे और क्षेत्र की लड़कियाँ पहली बार सार्वजनिक कबड्डी मुकाबले में शामिल हुईं। इकाई के सदस्यों ने बहुत परिश्रम कर लड़कियों की टीम तैयार की।अभिभावकों से निरंतर बातचीत कर, उनकी सहमति से यह कार्य पर्याप्त सुरक्षित एवं विश्वसनीय वातावरण में सम्पन्न हुआ। ग्रामीण क्षेत्र को रूढ़ियों से मुक्त कर लड़कियों को समाज का बराबर का हिस्सेदार बनाने के प्रयासों में से यह एक सफल प्रयास रहा। लड़कियाँ भी खेल की दुनिया में कुंठा रहित हो अपना नाम रौशन कर सकती हैं और खेल को एक रोज़गार के नए विश्वसनीय सेक्टर के रूप में अपना सकती हैं, इसकी प्रबल संभावना दिखलाई पड़ी। समुदाय ने इसमे हमारा सहयोग किया जिसे परस्पर विश्वास से और आगे ले जाने की ज़रूरत है। रूढ़ियों को समाप्त करने की दिशा में हमें अभी और काम करना है।

इसी प्रकार इस वर्ष कृषि क्षेत्र का निरुत्साह, उत्साह में बदलता दिखलाई पड़ा जो मेरे लिए दुगने हर्ष की बात रही। मैंने परिवर्तन की परिकल्पना के वक़्त अनेक मार्गदर्शकों से बातचीत कर कृषि को लेकर बड़े स्वप्न देखे थे। ग्रामीण क्षेत्र में कृषि न सिर्फ जीवन यापन का साधन है बल्कि इससे जुड़ी संस्कृति भी वर्षों से उन्नत रही है जो मुझे अत्यंत प्रिय रही है। उसका धीरे-धीरे ह्रास, पीड़ा की बात थी।

परिवर्तन की कृषि इकाई- हरियाली ज्ञान केंद्र ने पिछले कुछ वर्षों में उल्लेखनीय काम किया है। नवाचार, तकनीक, नई फसलों की बुआई, रोपाई, नई मशीनों का प्रदर्शन, वर्कशॉप्स, सेमीनार और मॉडेल खेती पर वर्ष भर प्रदर्शन कर इस इकाई ने क्षेत्र में कृषि को पुनर्जीवित किया है। फार्मर्स प्रोडुसर्स गिल्ड जैसे सचेत एवं ज़िम्मेदार किसान समूह की स्थापना हुई है। इससे किसानों को अपने उत्पादों का उचित लाभ मिलने का मार्ग प्रशस्त हुआ है। किसान अब मंडी में अपने उत्पाद खुद बेचकर लाभान्वित हो रहे हैं। बड़े किसान तो फसल परिक्रमण कर लाभान्वित हो ही रहे हैं, छोटे किसान और महिलाओं ने भी परिवर्तन की नायाब योजना परिवर्तन पोषण वाटिका, अपने घरों के आसपास पड़ी खाली ज़मीनों पर लगाना शुरु किया है। इससे घर में

उपयोग के लायक ताजी सब्जी के अतिरिक्त पैदावार को किसान बाज़ार में बेचकर आर्थिक रूप से सशक्त हो रहे हैं। छोटे किसान दलहन और राजमा का उत्पादन करने लगे हैं और क्षेत्र की महिला किसानों ने विश्वास से भर मशरूम की खेती को अपनाया है और लाभान्वित हो रही हैं। यह दिखलाई पड़ने लगा है कि कृषि क्षेत्र अब आर्थिक रूप से घाटे का सौदा न रहकर स्पष्ट रूप से फायदे का सौदा बन गया है और अनेक छोटे किसान बड़े किसान बनने का स्वप्न देखने लगे हैं।

परिवर्तन के गहन हस्तक्षेप से किसानों के बीच कृषि को ले भविष्यगामी योजनाएँ बनने लगी हैं। यही वह सकारात्मक बदलाव है जिसकी कल्पना मैंने आज से कई वर्ष पूर्व की थी।आज मैं भी किसानों की तरह उनकी भविष्यगामी योजनाओं और उनकी नई खुशियों का साझेदार हूँ।

लेकिन अपनी प्रसन्नता व्यक्त करने के बावजूद मैं यह भलीभाँति जानता हूँ कि कृषि क्षेत्र को और अधिक सम्मानीय स्थान पर ले जाने के प्रयास हमें करने हैं। युवाओं की इस क्षेत्र में पनपती दिलचस्पी आशा का संकेत है।

मैं मानता हूँ कि परिवर्तन स्थित अन्य इकाइयों के उत्साहजनक कार्यों के बाद भी हमें और अधिक प्रतिबद्धता से भविष्य में काम करने की ज़रूरत है। परिवर्तन के पास एक मज़बूत टीम है और मेरा विश्वास है कि वह टीम अपने समुदाय के लिए आगे और अधिक निष्ठा से काम करेगी और विकास के नए रास्ते प्रशस्त करेगी।

समस्त टीम को मेरी अनंत शुभकामनाएँ!

संस्थापक

अंतर्राष्ट्रीय युवा दिवस

12. 8. 2022

परिवर्तन से जुड़े युवाओं ने परिवर्तन साभागार में अंतर्राष्ट्रीय युवा दिवस का आयोजन किया।

सभी युवाओं ने 4 समीक्षात्मक बैठकें की और सहमति बनने के बाद कार्यक्रम को अंजाम दिया। इस कार्यक्रम की योजना बनाने में सतत विकास के लक्ष्यों को ध्यान में रखा गया। वर्ष 2022 के लिए इस दिवस का अंतर्राष्ट्रीय विषय-अंतर *पीढ़ीगत एकजुटता*, घोषित किया गया था जिसके अंतर्गत; सभी आयु वर्ग के लिए एक साझा विश्व बनाना, सतत विकास लक्ष्यों (एस.डी.जी.) को प्राप्त करना, सभी पीढ़ियों की पूरी क्षमता का लाभ समाज को देना, शामिल था। पीढ़ियों की एकजुटता के महत्त्व पर भी ज़ोर दिया गया था। इन्ही सब बातों को संदर्भित कर, परिवर्तन सभागार में 15-से 25 वर्ष के 53 सहभागियों संग इस दिवस को मनाया गया। कार्यक्रम में 25 युवतियाँ और 28 युवकों की संख्या, क्षेत्र के युवाओं में बराबरी के मूल्यों की चेतना को दर्शा रहे थे।

कार्यक्रम में सबसे पहले युवाओं के पसंदीदा गीत – *तू ज़िंदा हैं तो ज़िन्दगी के जीत पर यकीन कर/अगर कहीं है स्वर्ग तो उतार ला ज़मीन पर,* को रंगमंडली समूह द्वारा गाया गया। जिसके बाद,- बिहार में रोज़गार के उपलब्द्ध साधन विषय पर सघन चर्चा हुई और सरकार की पहल, मदद एवं सरकार द्वारा प्रदत ऋण विषयों पर विस्तृत जानकारी साझा की गई।

सरकार की योजनाओं पर चर्चा करते हुए अभिमन्यु सिंह ने बताया कि *एन.सी.एस.पी.* के आंकड़ों के अनुसार पिछले एक साल में बिहार में बेरोज़गार युवाओं की संख्या में तीन गुना वृद्धि हुयी है। बिहार सरकार की पहल की चर्चा करते हुए बिहार के युवाओं को स्वरोज़गार से जोड़ने के लिए सरकार ने नई स्टार्टअप नीति, बिहार मुख्यमंत्री उद्यमी योजना 2022 को स्वीकृति दी है। इसी चर्चा को आगे बढ़ाते हुए गुड्डू ने बताया कि देश की आज़ादी के बाद रोज़गार का सृजन कैसे करें इसमें *श्रमेव जयते* सफलता की कड़ी रही है। उन्होंने चर्चा के दौरान बताया कि मुख्यमंत्री उद्यमी योजना के अंतर्गत सभी महिला उद्यमियों को 10,00,000 रूपया तक ऋण प्रदान किया जा रहा है जिसमें 50 फीसदी यानि 5,00,000 रूपये का अनुदान प्रदान किया जा रहा है। मुख्यमंत्री कौशल विकास योजना भी चल रही है जिसके अंतर्गत युवाओं को तकनीकी कौशल प्रदान किया जा रहा है।

चर्चा के बाद परिवर्तन रंगमंडली द्वारा विवेकानन्द के जीवन से सम्बद्ध नाटक प्रस्तुत किया गया। इस प्रस्तुति को डोमा राम तथा पंकज ने बहुत ही बेहतरीन ढंग से प्रस्तुत किया और आकाश ने विवेकानन्द के रूप में विश्व धर्म सम्मेलन में दिए गए उनके भाषण के अंश को पढ़ा।

परिचर्चा- *बदलता मौसम, किसान और युवा* में अंशु कुमारी, रोबर्ट कुमार, पंकज कुमार, बिट्टू यादव तथा आकाश यादव ने सम्मिलित रूप से भाग लिया। जलवायु परिवर्तन से सम्बंधित डाक्यूमेंट्री भी इस दौरान दिखाई गई। *हम होंगे कामयाब एक दिन, हो हो मन में है विश्वास* समूह गान के साथ यह कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। इस समूह गान में सभी उपस्थित युवाओं के साथ परिवर्तन के युवाओं ने पूरे जोशो खरोश के साथ भाग लिया।

कार्यक्रम उपरांत कई प्रतिक्रियाएँ मिलीं;

युवा मुन्ना कुमार ने कहा; परिवर्तन द्वरा जो भी कार्यक्रम किया गया वह बहुत अच्छा रहा। किसी भी देश के युवा रीढ़ की हड्डी होती है। अगर युवा सशक्त हो, युवा शक्तिशाली हो तथा सही दिशा में हो तो देश ज़रुर आगे बढ़ेगा। परिवर्तन से जो भी कार्यक्रम किये गए चाहे युवा गीत हो, या डिबेट, रोज़गार के बारे में या बदलते मौसम के बारे में बताया गया हमें वह सबकुछ आगे चलकर युवाओं को रोज़गार दिलाने में सहायक बनेगा।

युवा सुधांशु सिंह ने कहा; युवा दिवस पर परिवर्तन के तरफ से किया गया युवाओं के लिए यह कार्यक्रम मनोरंजक के साथ साथ जानकारी युक्त रहा जिनसे युवाओं को रोज़गार से सम्बंधित बेहतर जानकारी भी मिली।

शिक्षक दिवस

6.09.2022

प्रत्येक वर्ष की तरह इस वर्ष भी भूतपूर्व राष्ट्रपति सर्वपल्ली डॉक्टर राधाकृष्णन के जन्मदिवस को भारत में शिक्षक दिवस की तरह मनाया गया। परिवर्तन परिसर में यह दिवस 6 तारीख को पूरे जोशो ख़रोश के साथ मनाया गया। परिवर्तन की स्थापना अनुसार परिवर्तन, अपने कार्यक्षेत्र के सरकारी स्कूलों के साथ मिलकर शिक्षा के प्रसार में सहयोग करता है, अतः इस आयोजन में सरकारी स्कूलों के 20 शिक्षकों एवं परिवर्तन के 10 साथियों ने मिलकर भागीदारी की।

कार्यक्रम स्थल को आकर्षक पोस्टरों, बैनरों, और रोचक किताबों के प्रदर्शन से सुसज्जित किया गया और शिक्षकों के परिसर में आने पर परिवर्तन रंगमंडली द्वारा स्वागत गान- *हम तुम्हारे आस में बैठे रहे... पुष्प की माला हम पहनाएँगे,* से शिक्षकों का स्वागत किया गया।

गुरु गोविन्द दोऊ खड़े, काके लागूँ पाय।
बलिहारी गुरु आपने गोविन्द दियो मिलाय।।

इस संबोधन के बाद बाल रंगमंडली द्वारा नाटक *सर्जरी* का मंचन किया गया। जो 21वीं सदी में पुराने ख़्यालात के एक डॉक्टर एवं मरीज के बीच घटित - हास्य एकांकी है। नाटक के समाप्त होते ही, संयुक्त राष्ट्रसंघ की सुरक्षा परिषद् द्वारा विश्व के 193 देशों के लिए निर्धारित सतत विकास लक्ष्यों को परिवर्तन द्वारा चलाए जा रहे कार्यक्रमों से जोड़ते हुए, एक पी पी टी प्रस्तुति दी गई और विधाओं पर बात की गई। गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के लिए किए जा रहे प्रयासों और उसमें नवीनता का ज़िक्र किया गया। विद्यालय परिवार और बच्चों के लिए परिवर्तन क्या सहयोग कर रहा है तथा किस तरह मिल-जुलकर पठन- पाठन का अच्छा माहौल तैयार करने में सहयोगी की भूमिका में कार्य करना चाहता है, इस पर गहन चर्चा हुई।

इन चर्चाओं में विज्ञान प्रयोगशाला, पुस्तकालय, भाषा ज्ञान, एवं गतिविधिपूर्ण गणित, इत्यादि विषयों पर भी बात हुई। विज्ञान प्रयोगशाला की शुरुआत से लेकर अब तक की अद्यतन जानकारी दी गई एवं आगे की योजना पर बात हुई। पुस्तकालय की योजना को शिक्षकों के समक्ष रखा गया। शिक्षा के अंतर्गत परिवर्तन की नवीनतम पहल- **गणितशाला** को लेकर भी शिक्षकों से बात की गई। खेल संचालक मिथिलेश द्वारा खेल सत्र में -विकास के लिए खेल, उत्कृष्टता के लिए खेल और नेतृत्व प्रशिक्षण सत्र द्वारा विद्यालय एवं समुदाय में परिवर्तन के जुड़ाव को और अधिक मज़बूत बनाने के लिए शिक्षकों से सहयोग की अपेक्षा जताई गई।

इसके पश्चात चेतना सत्र एवं पोषण वाटिका के संबंध में उपस्थित शिक्षकों से बात की गई; कैसे इन दो कार्यक्रमों की मदद से हम गाँव- समाज में सही सांस्कृतिक वातावरण एवं विद्यालयों में प्रारंभिक सत्र को प्रभावी बनाने का प्रयास कर रहे हैं। संतुलित पोषण की अवधारणा से बच्चों को जोड़ने का प्रयास किया जा रहा है। इसी चर्चा के क्रम में परिवर्तन बाल पथिक समूह को विद्यालय की बाल संसद से जोड़, सामाजिक एवं शैक्षणिक मूल्यों को आगे लेकर बढ़ने की भी बात हुई।

इसके अतिरिक्त किशोर एवं किशोरियों में किशोरावस्था में होने वाले शारीरिक बदलावों के विषय में जो जागरूकता कार्यक्रम परिवर्तन करता है, विशेषतया जिसमें किशोरियों में मासिकधर्म संबंधी स्वच्छता की बातों पर बच्चियों को जागरूक किया जाता है- जैसे विषयों को भी मेहमान शिक्षकों के साथ साझा किया गया। इन सभी बातों पर शिक्षकों के साथ अपनी बातें साझा करने के दौरान शिक्षकों के बहुमूल्य सुझाव भी प्राप्त हुए।

कार्यक्रम के समापन पर, मध्य विद्यालय भरौली से आये छात्र मोहित कुमार द्वारा सभी शिक्षकों की गरिमामयी उपस्थिति के लिए, धन्यवाद ज्ञापित किया गया और घरौंदा के बच्चों द्वारा बनाए गए ग्रीटिंग कार्ड शिक्षकों को उपहार स्वरुप भेंट किए गए। पृष्ठभूमि में परिवर्तन रंगमंडली द्वारा गाए गए गीत - *खुला दो महाराज कि मोरा जिया पढ़ने को चाहे, ने वातावरण को मनमोहक बना दिया।*

शिक्षकों की प्रतिक्रिया

उच्च विद्यालय भवराजपुर के शिक्षक श्री मिथिलेश ने विज्ञानशाला के सन्दर्भ में अपने यहाँ भी उन्नत लैब होने की बात कही परन्तु साथ ही यह दुख भी प्रकट किया-"वह कभी व्यवहार में नहीं आया क्योंकि वहाँ भी कोई विज्ञान शिक्षक नहीं है।" उन्होंने आमंत्रण दिया-"आप मेरे विद्यालय में आएँ मैं आपका सहयोग करूँगा, हमें आपकी ज़रूरत है।"

अंतर्राष्ट्रीय साक्षरता दिवस

8.7.2022

अंतर्राष्ट्रीय साक्षरता दिवस प्रत्येक वर्ष की तरह इस वर्ष भी परिवर्तन परिसर में सघन तैयारी के साथ मनाया गया। परिवर्तन के लिए इस दिवस का विशेष महत्त्व है क्योंकि यह परिवर्तन के लक्ष्यों में से एक अत्यंत आवश्यक लक्ष्य - **शिक्षा सबके लिए** का अभिन्न अंग है। इसी संदर्भ में एक साझीदार के रूप में परिवर्तन, अपनी 6 इकाइयों - शिक्षा, खेल, सामुदायिक रंगमंच, महिला समाख्या, आजीविका एवं कृषि संग कार्यक्षेत्र के 21 गाँवों में मुस्तैदी से वैकल्पिक एवं अनुपूरण शिक्षा के आयामों को समुदाय में प्रसारित करने का प्रयास कर रहा है।इन प्रयासों के अंतर्गत विद्यालय में रचनात्मक शिक्षण सामग्री के आयोजन के साथ - साथ संस्था स्थित केंद्र पर समुदाय के बच्चों के साथ कार्यशालाएँ, कहानी पाठ एवं गतिविधि संपृक्त शिक्षण आयोजित कर बच्चों से गहरा जुड़ाव सुनिश्चित किया जाता है।

इसी कड़ी में विद्यालयों में कहानी पाठ का आयोजन किया जाता रहा है। इस वर्ष भी पाठ से पहले 22 विद्यालयों में कहानी पाठ की योजना पर काम किया गया। सस्वर पाठ का अनेक बार अभ्यास किया गया जिसके उपरांत ही परिवर्तन के 44 सदस्यों की टीम कार्यक्षेत्र के 22 अलग-अलग विद्यालयों में 2-2 सदस्यों की संख्या में गई और बच्चों को प्यार से जोड़कर कहानी पाठ किया। आकर्षक पाठ के दौरान यह भी प्रयास किया गया कि कहानी से मिले सन्देश को सहजता के साथ बच्चों तक संप्रेषित किया जाए। पाठ के उपरान्त विभिन्न गतिविधियों का आयोजन कर कार्यक्रम को और अधिक रोचक एवं प्रभावी बनाने का प्रयत्न किया गया।

इस वर्ष प्रथम संस्था द्वारा प्रकाशित किताब - टर्र, (लेखिका कविता पुण्यमूर्ति, चित्रांकन एकता भारती) से 10 प्राथमिक विद्यालयों के चौथी एवं पाँचवीं कक्षा के बच्चों के संग कहानी पाठ हुआ। प्रथम की एक अन्य किताब - *लापता सुंदरी,* (लेखिका एवं चित्रकार प्रिया कुरियन) का पाठ छठवीं से आठवीं कक्षा के 12 मध्य विद्यालयों के बच्चों संग हुआ। जिसके बाद नाटक के पात्रों का रोल प्ले, कहानी का नाट्य रूपांतरण, चित्रांकन की भाषा में कहानी, पेपर क्राफ्ट से पात्रों को गढ़ना और ऑडियो क्लिप के माध्यम से जानवर पात्रों की आवाजों को पहचानने की मज़ेदार गतिविधियाँ आयोजित की गईं। सहभागिता कर रहे बच्चों और शिक्षकों संग परिवर्तन के लिए भी यह अनुभव उत्साहवर्धक रहा।

लगभग 967 बच्चों और 30 शिक्षकों की उपस्थिति ने इस कार्यक्रम को विस्तार दिया एवं बेहद सफल बनाया। बच्चे एवं उनके शिक्षक इस पाठ से बहुत समृद्ध हुए और इस तरह के और सत्रों का आग्रह करने लगे। पाया गया है कि इस तरह के उपक्रम साक्षरता एवं उससे जुड़ी पर्यावरणीय जागरूकता को बेहतर प्रसारित करते हैं। इसके अतिरिक्त बच्चों की पाठ्य पुस्तकों में भी दिलचस्पी बढ़ती है और भाषा एवं अन्य रचनात्मक पहलुओं का शानदार विकास होता है।

कक्षा चौथी एवं पाचवीं के बच्चों के साथ टर्र कहानी सुनाई गई एवं उससे जुड़ी गतिविधियों का संचालन किया गया। इसके अतिरिक्त 12 अन्य मध्य विद्यालयों में *लापता सुन्दरी* कहानी सुनाई गई एवं उससे जुड़ी गतिविधियों का संचालन किया गया।

बाल दिवस
13.11.2022

प्रत्येक वर्ष परिवर्तन में बाल दिवस उत्साह और हर्ष से मनाया जाता है। स्वतंत्र भारत के प्रथम प्रधानमंत्री श्री जवाहर लाल नेहरू के जन्मदिवस 14 नवंबर के दिन को ही बाल दिवस के रूप में मनाया जाता है। इस दिन पंडित नेहरू का बच्चों से जुड़ाव और बच्चों के लिए देखे गए उनके सुंदर सपनों को याद किया जाता है। बच्चों के लिए सहजता से उपलब्ध रहने वाले प्रधानमंत्री को उस दौर के बच्चे प्यार से चाचा नेहरू कहा करते थे। इन्ही सब बातों को संदर्भित करते हुए 21 गाँवों के 197 बच्चों के संग परिवर्तन परिसर के सभागार में इस वर्ष बाल दिवस मनाया गया।

परिवर्तन परिसर की अलग-अलग इकाइयों ने मिलकर बच्चों की रूचि का ध्यान रखते हुए एक थीम बनाई- "*बच्चों की आज़ादी एवं कल्पनाशीलता*" जिसके अंतर्गत सभी कार्यक्रमों की अवधारणा रखी गई। प्रयास था कि बच्चे परिवर्तन की विभिन्न इकाइयों के स्टाल में जाकर, घूमते, फिरते, वहाँ आयोजित गतिविधियों में शामिल हों और अपनी कल्पना को ऊँची उड़ान दें।

महिला समाख्या के स्टाल पर बाल श्रम पर आधारित पोस्टर, महिला समाख्या से जुड़े पाँच विषयों से सम्बंधित पोस्टर, शरीर की जानकारी से सम्बंधित किताबें- *मेंसट्रूपीडिया* एवं *गुलू* प्रदर्शित किए गए थे। मेंसट्रूपीडिया से संबंधित गतिविधि भी आयोजित की गई थी-एक चार्ट पेपर पर किताब का मुख्य बिंदु- *माहवारी के समय कपड़ा या पैड क्या ज़्यादा सुरक्षित है? अपने परिवार या आस पास में माहवारी पर बातचीत होनी चाहिए या नहीं?* लिखा हुआ था और पास में एक डब्बे के अन्दर कुछ पर्चियाँ थीं जिनपर किशोरियाँ को अपनी प्रतिक्रिया लिखकर बगल के खाली डब्बे में डालनी थी।

इसी तरह गुलू पुस्तक से किशोरों के लिए कुछ सवाल पर्चियों पर लिखे हुए थे - *व्यायाम करना क्यों ज़रुरी है? अपने शरीर की देखभाल करना कितना ज़रुरी है? किशोरावस्था में किशोर किशोरियों के भीतर किस -किस प्रकार के भावनात्मक बदलाव आते हैं?*

सभी जवाबों की गोपनीयता सुरक्षित थी। इससे बच्चों ने खुलकर प्रतिक्रियाएँ दीं जिससे उनके मन की वास्तविक बातों का पता चला और बच्चों के प्रति हमारी समझ बढ़ी।

उमंग के स्टाल पर बैनर, फुटबॉल, वॉलीबाल, कोण, मार्कर, जर्सी, गोला, तवाम, रेडर, सीढ़ी और मेजिकल बॉल प्रदर्शित थे। S 4 D से हापिंग सीढ़ी, L I A से कैच हिम, S 4 E से टायर पर निशाना लगाना, स्किपिंग रोप से स्किपिंग, व्यायाम एवं साइक्लिंग मज़े-मज़े में चल रही थी।

कृषि इकाई का स्टाल अनूठा था। बैनर, कृषि के विभिन्न तरह के औजार तथा पुराने अनाज का बीज, विभिन्न प्रकार के धान की बालियाँ, संतुलित थाली एवं अंकुरित बीज सभी प्रदर्शित थे। "*बूझो तो जानो*" गतिविधि में अलग- अलग तरह के फल ,अलग- अलग डब्बों में रख दिए गए थे, जिसे छू कर बच्चों को अनुमान लगाना था कि कौन से डब्बे में कौन सा फल या बीज रखा हुआ है।

रंगमंडली इकाई ने प्रदर्शनी स्वरूप नाटक का लिखा हुआ टुकड़ा, मेकअप, नाटक का फोटो एवं वाद्ययंत्र रखा था और बच्चों को खुला आमंत्रण दे रखा था कि वे आयें और हारमोनियम पर अपना पसंदीदा गीत गाएँ अथवा प्रदर्शित वाद्ययंत्रों को छूकर देखें और मन करे तो उसे बजाने का प्रयास भी करें।

इसके अतिरिक्त शिक्षा इकाई ने अपनी उप इकाइयों की मार्फत प्रदर्शनी लगाई और गतिविधियाँ आयोजित कीं।

घरौंदा ने मधुबनी पेंटिंग, पेपर क्राफ्ट, टेराकोटा, सजा हुआ दिया कार्यशाला के बच्चों द्वारा करवाया गया कार्य प्रदर्शित किया और "*स्वतंत्र चित्रकला*" करवाई जिसमें बच्चे स्टाल पर जाकर एक चित्र शुरु करते थे फिर दूसरा बच्चा उसे आगे बढ़ाता था फिर तीसरा बच्चा उस पर काम करता था। बच्चों की सामूहिक कल्पनशीलता का यह अद्भुत उदाहरण साबित हुआ।

बालघर आँगन ने बाइस्कोप, म्यूजिक और पेपर-मास्क प्रदर्शित किया और पपेट के माध्यम से कहानी पाठ – *टिपटिपवा, अक्कू हुई गुस्सा, इक्की दुक्की* करवाया। इसके अलावा एक बोर्ड पर बनी कुछ आकृतियों पर अलग अलग रंग के ब्लॉक्स में रंग भर कर एक चित्र को पूरा किया गया और बच्चों को उससे सम्बंधित कहानी रचने को कहा गया।

बालघर किसलय ने अपनी प्रदर्शनी में अपनी पत्रिका *चहकने की ललक*, दीवाल अखबार, कहानी कार्ड, कविता पोस्टर और वर्ग पहेली को स्थान दिया तथा गतिविधि शब्द पहेली से बच्चों को अलग-अलग अक्षर से शब्द बनाने को कहा। तस्वीर के माध्यम से विभिन्न लेखकों की पहचान ने बच्चों की याददाश्त की आनंदायक परीक्षा ली।

परिवर्तन पुस्तकालय ने *गुल्लक पिटारा* का स्टॉल लगाया जिसमें बच्चों के लिए विविध रंगों का बाल-साहित्य सजाया गया और बच्चों को रुचि अनुसार स्वतः कथा पाठ करने को कहा गया। इसके अतिरिक्त बच्चे चार्ट पेपर पर वाक्यों को जोड़ स्वतंत्र कहानी रचने का प्रयास भी कर रहे थे।

विज्ञानशाला ने प्रदर्शनी में जीव-विज्ञान से जीवाश्म, माइक्रोस्कोप दिखलाया और शर्बत पीने वाले पाइप और कैंची की मदद से सिटी निर्माण एवं सूक्ष्मदर्शी में स्टोमेटा का अवलोकन किया।

झरोखा की प्रदर्शनी में कंप्यूटर, करिकुलम एवं वर्क-शीट रखी हुई थी और पज़ल देकर बच्चों को शब्द चिन्हित करवाया जा रहा था।

गणितशाला ने *जोड़ो ज्ञान* किट से स्ट्रा पाईप, जोड़ो ब्लाक, घर चलो तथा गणित से जुड़ी सामग्रियों का प्रदर्शन किया। जोड़ो ब्लाक से अलग अलग प्रकार की आकृति का निर्माण करवाया और माचिस की तीली से गणितीय पजल की रचना करवाई। ये गतिविधियाँ बच्चों को चुनौती भरी तो लगीं लेकिन बेहद दिलचस्प भी मालूम हुईं।

छापाकला/सिरामिक इकाई की प्रदर्शनी में सिरामिक के अलग-अलग बर्तन एवं सामान तथा छापाकला के अलग अलग प्रिंट, टूल्स एवं प्लेट सजाए गये। बच्चे गीली मिट्टी से अलग- अलग खिलौने बनाने में रम गए और इस गतिविधि के माध्यम से मिट्टी और रचनात्मकता के नए आयाम खोज पाए।

मेले का आनंद उठा बच्चे सभागार में एकत्र हुए जहाँ श्री रोबोट और श्री आर्य ने उनका स्वागत किया। श्री राजवर्धन ने बाल दिवस मनाने का उद्देश्य, और जवाहरलाल नेहरू के बारे में छोटा सा वक्तव्य दिया। जिसके बाद रंगमंडली के साथियों द्वारा "*बच्ची है नन्ही सी*" और "*कोयली के बचवा*" संगीत और पहेली का प्रस्तुतीकरण हुआ। बच्चों ने काफी उत्साह से इसमें भाग लिया और पहेली का जवाब दिया। संगीत के बाद विज्ञान क्लास से जुड़े उज्ज्वल कुमार द्वारा "*वायु दाब*" को समझाते हुए तीन प्रयोग दिखाए गए जिसमें अन्य बच्चों ने भी बढ़ चढ़कर भाग लिया। विज्ञान मॉडल प्रस्तुति के बाद बाल पथिक- मोहित कुमार और सचिन कुमार द्वारा बाल पथिक का उद्देश्य एवं अनुभव साझा किया गया।

बाल रंगमंडली के बच्चे इसके बाद बाल दिवस विषय पर आधारित नाटक "*नौनिहाल*" को सबके समक्ष जोश के साथ लेकर आए। बच्चों पर अपने विचार एवं सपने नहीं थोपने चाहिए, नाटक की यही सुंदर विषयवस्तु थी जिससे बच्चों ने तारतम्य महसूस किया।

इसके उपरांत फुटबॉल मैच की विजेता और उपविजेता टीम को श्री आलोक, श्री आशुतोष एवं श्रीमती मधुबाला के हाथों पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम के अंत में श्री दीपक ने धन्यवाद ज्ञापित कर मेले का समापन घोषित किया।

पोषण जागरूकता कार्यक्रम

1 सितम्बर से 4, 7, 9, 10 सितम्बर 2022

परिवर्तन का प्रमुख लक्ष्य समुदाय के लिए पोषण, स्वास्थ्य एवं स्वच्छता के प्रति जागरूकता पैदा करना और स्थानीय स्त्रोतों से संसाधन उपलब्ध करवाना है। ऐसे में परिवर्तन लंबे समय से पोषण जागरूकता कार्यक्रम आयोजित करता आया है। इस वर्ष परिवर्तन की कृषि ,शिक्षा एवं उमंग इकाई ने मिलकर 7 पंचायत स्तर के विद्यालयों के कक्षा 9 एवं 10 के 544 छात्रों के संग यह कार्यशाला आयोजित की।

पूरे देश में सितंबर माह, पोषण माह के रूप में मनाया जाता है। इसी संदर्भ में परिवर्तन संस्था द्वारा जीरादेई और आँदर प्रखंड के 7 पंचायतों के उच्च विद्यालयों में किशोर और किशोरियों के साथ पोषण जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस जागरूकता कार्यक्रम में विभिन्न शैक्षणिक गतिविधियों के माध्यम से पोषण महत्त्व के बारे में प्रतिभागियों को जागरूक करने और दैनिक जीवन में अपनाये जाने वाले उपायों को शामिल करने वाले गुर बताये गए; पोषणयुक्त भोजन, व्यायाम एवं स्वच्छता का निर्वहन कैसे हो तथा ये सभी पक्ष किस तरह सामुदायिक विकास के महत्त्वपूर्ण मानक हैं, यह सब जानकारियाँ साझा की गईं।

पंचायत स्तरीय कार्यक्रम आयोजन की तिथि, स्थल और प्रतिभागियों की संख्या;

क्र. स.	दिनांक	विद्यालय	पंचायत	किशोरियाँ	किशोर	कुल
1	01/09/22	उच्च विद्यालय बंगरा उजैन	बलिया	63	36	99
2	02/09/22	उच्च विद्यालय बालाईपुर	भरौली	70	38	108
3	07/09/22	उच्च विद्यालय रुइयाबंगरा	मापुर	26	14	64
4	09/09/22	उच्च विद्यालय नरेन्द्रपुर	नरेन्द्रपुर	21	21	42
5	10/09/22	उच्च विद्यालय भवराजपुर	भवराजपुर	70	50	120
6	13/09/22	उच्च विद्यालय बंधू श्रीराम	चंदौली गंगौली	27	31	58
7	15/09/22	उच्च विद्यालय संजलपुर	मियाँ के भटकन	29	24	53
						544

पोषण दिवस

दिनांक	गाँव का नाम	उपस्थिति	किशोरियों की संख्या	गर्भवती की संख्या	धात्री की संख्या	अन्य
1/9/22	नरेन्द्रपुर (साह टोला)	45	08	01	02	34
2/9/22	भरौली (विकास भवन)	35	10	02	01	22
3/9/22	बंगरा (आँगनबाड़ी)	25	15	01	01	08
4/9/22	बड़हुलिया(भगत टोला)आँगनबाड़ी	28	04	01	01	22
7/9/22	संथू (आँगनबाड़ी)	15	04	01	01	09
9/9/22	मियाँ भटकन(शर्मा टोला)	17	07	00	01	09
10/9/22	भवराजपुर उत्तर टोला	30	10	01	01	18
		182	58	07	08	109

पोषण दिवस की शुरुआत गाँव के लोगों को एक स्थान पर इकट्ठा कर हुई जिसके बाद रंगमंडली के सदस्यों ने पोषण गीतों से सभी उपस्थित जनों को खूब आकर्षित किया। जब समां बंधने लगा तो प्रदर्शित खाद्य सामग्री और हरी साग -सब्जियों का स्टाल दिखलाते हुए प्रत्येक का महत्त्व सबसे साझा किया गया। घर एवं आस-पास में उपलब्ध सब्जियाँ तथा मौसमी सब्जी के बारे में ज़ोर देकर बताया गया क्योंकि वह उन्हें मुफ्त में या कम दामों में आसानी से उपलब्ध हो सकती है। कुछ ऐसी सब्जियों के बारे में भी बताया गया जिसे आसानी से घर में उगाया जा सके।

खून की कमी अर्थत एनीमिया से सम्बन्धित बातों पर चर्चा हुई। संतुलित आहार के बिना रक्ताल्पता हो जाती है, खासतौर युवतियों एवं महिलाओं में क्योंकि प्रत्येक माह वे मासिक धर्म के चक्र से गुज़रती हैं। सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्रों में सरकार द्वारा फॉलिक ऐसिड की गोली मुफ़्त वितरित की जाती है जिससे युवतियों एवं महिलाओं के शरीर में ख़ून की कमी न रहे लेकिन यह भी बताया गया कि गोली अनुपूरण है और ख़ून की कमी से बचने के लिए संतुलित आहार ही प्रथम उपाय है। किशोरियों वाली रक्ताल्पता की परिस्थिति गर्भवती महिलाओं एवं धात्री महिलाओं में भी उपज सकती है इसीलिए संतुलित भोजन की थाली का चित्र दिखाकर बात को विस्तार से समझाने का प्रयास किया गया। नवजात बच्चे को जन्म के तुरंत बाद माँ के गाढ़े पीले दूध अर्थात कोलोस्ट्रम पिलाने के महत्त्व एवं संक्रमण से बचाव के लिए टीकाकरण की ज़रूरत को रेखांकित किया। बच्चे को 6 माह तक माँ के दूध की आवश्यकता होती है और उसके अनेक लाभ हैं इसके बारे में भी जानकारी दी गई।

इस सफल कार्यक्रम में 182 किशोरियों 58 गर्भवती महिलाओं, 7 धात्री महिलाओं, और 109 अन्य लोगों ने हिस्सा लिया। कार्यक्रम सम्पन्न होने पर अनेक प्रतिक्रियाएँ मिलीं जिन्होंने हमारे प्रयासों को संबल दिया;

नरेन्द्रपुर गाँव के लोगों का कहना था- “कार्यक्रम अच्छा लगा। नई बातें जानने को मिलीं। हम लोग साग सब्जी खाते हैं लेकिन कौन सा विटामिन मिलता है यह पता नहीं था वह जानने को मिला।”

मियाँ भटकन (शर्मा टोला) से एक गर्भवती महिला ने कहा – “मेरे लिए नई जानकारी मिली कि गर्भावस्था में अतिरिक्त आहार लेनी चाहिए। आयरन की गोली के खाने का तरीका जाने तो अब खायेंगे। पहले फेंक देते थे चक्कर आता था खाने के बाद।”

ग्रामीण विसर्जन कार्यक्रम (आर आई पी)

14.9.2022

तक्षशिला एजुकेशनल सोसाइटी की महत्त्वपूर्ण परियोजना ग्रामीण विसर्जन कार्यक्रम (आर आई पी –रुरल इमर्शन प्रोग्राम) प्रत्येक वर्ष की तरह इस वर्ष भी परिवर्तन परिसर, गाँव नरेन्द्रपुर, जिला सिवान, बिहार में सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। शहरी स्कूली छात्रों को ग्रामीण जनजीवन से परिचित करवा कर, चुनौतियों का समाधान ज़मीनी स्तर पर ही तलाश, वास्तविक अनुभव का हिस्सा बनाना इस कार्यक्रम का लक्ष्य है। छात्र इस अनुभव के आधार पर सामाजिक और राजनीतिक स्तर पर अधिक ज्ञानवान होते हैं और भविष्य के संभावित नेतृत्वकर्ता बनने का कौशल अर्जित करते हैं। ऐसे शैक्षणिक अनुभव छात्रों के भीतर समुदाय से जुड़ाव पैदा कर मनुष्यता के पक्षधर मूल्यों का निर्माण भी करते हैं इसलिए भी ये बहुत ज़रूरी अनुभव होते हैं।

इस वर्ष भी कार्यक्रम की शुरुआत पटना डी पी एस के छात्रों के परिवर्तन परिसर पहुँचने से हुई, जहाँ परिवर्तन टीम ने पुष्प वर्षा और चंदन का तिलक कर उनका स्वागत किया। इसके पश्चात सभी छात्र सभागार पहुँचे, जहाँ गाँव से आए विशेषज्ञ, श्री सुधीर श्रीवास्तव, उमाशंकर सिंह, अरबिन्द तिवारी एवं सुखनंदन यादव ने ग्रामीण जीवन की विशेषताओं एवं विषमताओं पर प्रकाश डाला और परिवर्तन के समन्वयक श्री आलोक ने समूचे कार्यक्रम की रूपरेखा प्रस्तुत की।

छात्र फिर तरोताज़ा हो परिवर्तन परिसर में चल रहे खेल सत्र में शामिल हुए और उसके बाद प्रतिष्ठित नृत्यांगना अन्वेषा महंता ने सत्तारिया नृत्य की प्रस्तुति दी जिसे उन्होंने चाव से देखा और सराहा।

अगले दिन से छात्र प्रातः योग व्यायाम कर निर्धारित गाँव में परिवर्तन प्रदत्त एक वॉलेंटियर और एक मार्गदर्शक के साथ फील्ड विज़िट के लिए चल पड़े। कार्यक्षेत्र के 10 गाँव फील्ड विजिट के लिए पूर्वनिर्धारित किए गए थे; बड़हुलिया, रूईयाँ, भवराजपुर, बेलही, बन्यू श्रीराम, संथू, खेम भटकन, धरमपुर, मियाँ के भटकन और संजलपुर। संस्थागत मैपिंग हुई और दोपहर बाद दिल्ली विश्वविद्यालय के सम्मानित प्राध्यापक, विचारक एवं चिंतक श्री अपूर्वानन्द के साथ रु-ब-रु चर्चा हुई, जिसमें उन्होंने नागरिकों की आवाज़ की ताकत पर विस्तृत व्याख्यान दिया।

अपनी अंतिम प्रस्तुति के लिए छात्रों ने 4 घंटे की फील्ड विज़िट की और दूसरे रु-ब-रु कार्यक्रम में पर्यावरण, विशेषज्ञ, एवं चिंतक श्री सोपान जोशी के साथ भविष्य में विज्ञान, विषय पर अपनी जिज्ञासाओं को रखा। सोपान ने उस विचारोत्तेजक सत्र में सभी को यथोचित उत्तर दिए। शाम के वक्त छात्रों को प्रतिष्ठित सितार वादक ध्रुव वेदी ने सुंदर संगीत से तरंगित किया।

कार्यक्रम के अंतिम दिन, खंड विकास अधिकारी श्री जीतेंद्र कुमार, खंड शिक्षा अधिकारी श्री जितेंद्र प्रसाद, 8 मुखियाओं और जन प्रतिनिधियों ने बच्चों का प्रस्तुतीकरण देखा और बच्चों की समझदारी, कल्पनाशीलता एवं नेतृत्व कौशल को खूब सराहा।

प्रमाणपत्र वितरण के बाद कार्यक्रम सम्पन्न हुआ और छात्र पटना लौट गए।

गणतंत्र दिवस

26 जनवरी 2023

प्रत्येक वर्ष गणतंत्र दिवस को राष्ट्रीय पर्व के रूप से मनाया जाता है। इस दिन वर्ष 1950 में देश में विधिवत रूप से गणतंत्र की बहाली की गई थी और स्वतंत्र भारत ने अपने संविधान के साथ विश्व पटल पर एक लोकतंत्र के रूप में अपनी उपस्थिति दर्ज की थी। उसीकी महत्ता को रेखांकित करने के लिए प्रति वर्ष परिवर्तन परिसर में भी गणतंत्र दिवस उत्साह के साथ मनाया जाता है।

इस वर्ष भी कार्यक्रम की शुरुआत परेड के साथ की गई। श्री सुनील एवं श्री मिथिलेश ने तिरंगा फहराया और रंगमंडली टीम एवं उपस्थित सदस्यों ने राष्ट्रीय गान गाया। इसके बाद परिवर्तन टीम के साथ सभी लोगों ने शहीद उमाकांत स्थल एवं गाँधी स्मृति स्थल पर माल्यार्पण किया और लौटकर परिवर्तन परिसर में आए जहाँ मुक्ताकाश मंच पर अन्य कार्यक्रम हुए।

शुरुआत *जाँनिसार अख़्तर* द्वारा रचित गीत;

"*सलामत रहे अपनी दस्तों ज़मीं,*
और रहे गुनगुनाता हमारा गगन।"

से हुई जिसे रंगमंडली के संचालक श्री आशुतोष के निर्देशन में तैयार किया गया था। इसके बाद शिक्षा उप इकाई, बालघर किसलय और पुस्तकालय के बच्चों ने अपने देश के लोकतंत्र को याद करते हुए कविता पाठ किया- "*मैं भारत का लोकतंत्र हूँ*।" बच्चों ने उत्साह और पराक्रम के साथ इस कविता को सबके सामने प्रस्तुत किया। लोकतंत्र और शिक्षा के परिप्रेक्ष्य में कार्यक्रम को आगे बढ़ाते हुए परिवर्तन शिक्षाकर्मियों द्वारा लोकतांत्रिक शिक्षा पर प्रकाश डाला गया। लोकतांत्रिक शिक्षा क्या है? इसका इतिहास एवं महत्त्व जैसे प्रश्नों पर स्वस्थ संवाद हुआ। खेल इकाई-उमंग के बच्चों द्वारा "*डूब्लिकेट*" नामक नाटक का मंचन किया गया। छोटे-छोटे बच्चों ने नाटक के माध्यम से स्कूल व्यवस्था एवं उसकी व्यवहारिक कमज़ोरियों को उजागर किया जो दर्शकों को बहुत पसंद आया।

इसके बाद शिक्षा से जुड़े बच्चों ने भारत के संविधान की उद्देशिका का भाव स्पष्ट करते हुए शब्दार्थ के साथ प्रस्तुति दी। इस नवीन ढंग की प्रस्तुति में बच्चों ने उद्देशिका में वर्णित हर संदेश को अभिनय के माध्यम से दर्शाया। इसके साथ ही साथ भारत की विविधताओं को दिखलाने के लिए अलग – अलग क्षेत्र की वेशभूषा धारण की। महिला समाख्या से जुड़ी सहयोगिनियों द्वारा "*झंडा में तीन रंग हो*" गीत की प्रस्तुति बिहार के लोकसंगीत के धुन पर हुई और झंडा गीत के उपरांत बालघर आँगन के 20 बच्चों द्वारा "*प्यारे बापू*" बालगीत की आकर्षक प्रस्तुति हुई जिसे दर्शकों का बहुत प्यार मिला।

कार्यक्रम के अंतिम चरण में परिवर्तन रंगमंडली के सदस्यों द्वारा

लोकतांत्रिक शिक्षा व्यवस्था पर तैयार नाटक की रोचक प्रस्तुति हुई। तत्पश्चात, परिवर्तन के संचालक श्री आलोक ने लगभग 400 की संख्या में उपस्थित दर्शकों का कार्यक्रम में शामिल होने के लिए आभार प्रकट किया और गणतंत्र दिवस की शुभकामनाएँ पुनः प्रेषित करते हुए परिवर्तन साथियों के सहयोग से सभी उपस्थित जनों के बीच मिष्ठान बाँटा।

परिवर्तन एवं स्पिक मैके की साझेदारी

25-27 अगस्त 2022

स्पिक मैके संस्था, संस्कृति एवं कला के माध्यम से बच्चों को वैकल्पिक शिक्षा प्रदान करती है। परिवर्तन के साथ मिलकर वह स्थानीय सरकारी एवं गैर सरकारी स्कूलों के बच्चों के बीच प्रदर्शनकारी कला को लेकडेम- अर्थात प्रदर्शन एवं व्याख्यान के ज़रिए पहुँचाती है और नृत्य संगीत की बारीकियों से छात्रों को परिचित करवाती है।

इस बार लगभग तीन वर्षों के अंतराल पर 6 स्थानीय स्कूलों में स्पिक मैके कार्यक्रम का आयोजन किया गया और नृत्य शैली ओडिसी की प्रस्तुति हुई।ओडिसी नृत्य का उद्गम जग्गनाथ पुरी से हुआ जिसके बारे में नृत्यांगना *शताब्दी मल्लिक* ने विस्तारपूर्वक बताया। इस नृत्य को आदि काल में देवदासियाँ मंदिरों में किया करती थीं, लेकिन धीरे-धीरे यह मंदिर से बाहर आया और गोटिपुआ शैली के नाम से पुरुषों द्वारा किया जाने लगा। जब बहुत बाद में इसे महिलाओं ने भी करना प्रारंभ किया तब यह ओडिसी नृत्य कहलाया।

इस नृत्य को *शताब्दी* ने चार भागों में अलग-अलग बाँट रखा था – मंगलाचरण, स्थाई, पल्लवी, अभिनय और मोक्ष। इन सभी भंगिमाओं को स्कूलों में उन्होंने प्रस्तुत किया। यह एक तरह का डांस डेमोंसट्रेशन था जिससे स्थानीय स्कूली बच्चे इस नृत्य शैली को बेहतर तरीके से समझ पाए। बच्चों को भरतमुनि के नाट्य शास्त्र ,अभिनय दर्पण एवं अभिनय चन्द्रिका के बारे में भी बताया गया।

स्कूली बच्चों को मंच पर आमंत्रित कर उनसे भी नृत्य की प्रारंभिक मुद्राएँ करवाई गईं। बच्चे बड़े चाव से मंच पर आये और उत्साह से नृत्य सीखा। आँखों की भाषा एवं हस्त सञ्चालन पर भी शताब्दी ने ज़ोर दिया और बच्चों से भी हस्त मुद्राएँ करवाईं। बच्चों के आनंद का ठिकाना न था।

स्थानीय स्कूलों के बी ई ओ ने भी बड़हुलिया गाँव के प्रदर्शन को देखा और सराहा।

"स्पिक मैके का कार्यक्रम परिवर्तन द्वारा नहीं करवाया जाता तो हमें पता ही नहीं चलता कि ओडिसी नृत्य क्या है?"-शिक्षक उज्जैन बंगरा

"इतनी गर्मी में भी इतनी उर्जा के साथ आप नृत्य कर रही हैं इससे हम लोगों को भी प्रेरणा मिलती है।" शिक्षिका बड़हुलिया

"वर्तमान समय में ऐसे नृत्य और शास्त्रीय संगीत की बहुत ही आवश्यकता है, दिन प्रतिदिन हमारे समाज में ऑर्केस्ट्रा और अश्लील गीतों का प्रचलन बढ़ता जा रहा है जिससे बच्चे और युवा दोनों ; प्रभावित हो रहे हैं। ऐसे कार्यक्रमों से भारतीय संस्कृति और कलाओं के बारे में जागरूकता बढ़ती है।" -प्रधानाचार्य, अरविन्द जी, उज्जैन बंगरा

25 – 27 अगस्त 2022 कलाकार (शताब्दी मल्लिक ओडिशी)

क्रम सं.	तारीख	समय	स्कूल	आउटरिच
01	25.08.22	10:30 – 11:30	उच्च विद्यालय, उज्जैन बंगरा	120
		12:00 – 01:00	माध्यमिक विद्यालय, बलिया	100
02	26.08.22	10:30 – 11:30	माध्यमिक विद्यालय, भरौली	100
		12:00 – 01:00	उच्च विद्यालय, नरेन्द्रपुर	120
03	27.08.22	10:30 – 11:30	उच्च विद्यालय, बन्धू श्रीराम	120
		12:00 – 01:00	माध्यमिक विद्यालय बड़हुलिया	100
			आउटरीच	660

क्षमता संवर्धन कार्यशालाएं

संगीत कार्यशाला

प्रत्येक वर्ष की तरह इस वर्ष भी परिवर्तन में क्षमता संवर्धन कार्यशालाएं आयोजित की गईं। उन प्रमुख कार्यशालाओं में रंगमंडली के साथ की गई कार्यशाला विशिष्ट रही। सुप्रसिद्ध संगीत विशेषज्ञ श्री काजल घोष दिल्ली से पधारे और उन्होंने रंगमंडली के 8 सदस्यों, बाल रंगमंडली की 10 किशोरियों एवं उज्जैन बंगरा के 10 छात्रों के साथ उक्त कार्यशाला संचालित की। संगीत में सरगम की महत्ता के माध्यम से सुरों को ठीक करना, बेहतर हारमोनियम बजाने का हुनर सीखना एवं वेस्टर्न कॉर्ड की जानकारी पर शिद्दत से काम किया गया। उम्मीद है कि इस प्रशिक्षण के बाद से भविष्य में रंगमंडली कुछ नए प्रोडक्शंस तैयार करेगी जिसमें इस का प्रतिबिंब झलकेगा। रंगमंडली तो श्री काजल घोष के सान्निध्य से लाभान्वित हुई ही, वे स्वयं भी रंगमंडली के सदस्यों से मिलकर अभिभूत थे –*“नहीं सोचा था इस ग्रामीण इलाके में इतने उत्सुक और प्रतिभाशाली संगीतकार, गायक और नाटककार मिलेंगे। इनसे मिलने का यह अवसर, मेरे लिए भी अविस्मरणीय है।“*

नाट्य कार्यशाला

22.12.2022

सुप्रसिद्ध नाट्य विशेषज्ञ, श्री तनवीर अख़्तर के संग नाट्य कला की बारीकियों को लेकर सघन कार्यशाला हुई। तनवीर अख़्तर ने अभिनेताओं की भाषा और अभिनय तकनीक का रियाज़ करवाया और रंगमंडली में शामिल हुए कुछ नए सदस्यों को आवश्यक बुनियादी प्रशिक्षण भी दिया। चूंकि रंगमंडली अब नए सिरे से पुनः संगठित हो रही है अतः यह प्रशिक्षण ज़रूरी था और नए अभिनेताओं के आत्मविश्वास को बढ़ाने वाला भी था। प्रशिक्षण के समय से ही नाटक-*कबीरा खड़ा बाज़ार* में की तैयारी की जा रही है। उम्मीद है कि इस नाटक के प्रदर्शन के साथ समुदाय में अत्यंत सकारात्मक संदेश जाएगा क्योंकि यह नाटक न सिर्फ हिन्दुस्तानी (*उर्दू एवं हिन्दी मिश्रित)* भाषा के स्तर पर अनूठा है बल्कि इस बार के प्रदर्शन में 6 महिलाएँ और 19 पुरुष पात्र भाग ले रहे हैं, यह एक बड़ी टीम है उस लिहाज़ से भी यह अनूठा प्रोडक्शन है इससे निश्चित ही रंगमंडली को नई पहचान एवं उठान मिलेगी।

कृषि हरियाली कृषि ज्ञान केंद्र

समुदाय में कृषि के पुनर्जीवन, विस्तार एवं आधुनिकीकरण के लिए परिवर्तन प्रयासरत है। कृषि ग्रामीण जीवन की आय का प्रमुख आधार है लेकिन हाल के वर्षों में वह अनेक कारणों-पुरातन तकनीक,अल्पज्ञता,मौसम की अनिश्चितता और वृहद आर्थिक घाटों की वजह से तज्य व्यवसाय बनता जा रहा है। इस संकट को संबोधित करने के उद्देश्य से परिवर्तन ने अपनी एक स्वतंत्र कृषि इकाई-हरियाली कृषि ज्ञान केंद्र की स्थापना की है जो समुदाय के बीच जाकर जागरूकता बढ़ाने, कृषि साहित्य, नई तकनीक, मौसम की जानकारियाँ, उन्नत बीज,खाद एवं कृषि उपकरणों का प्रसार एवं वितरण करता है। इसके साथ ही किसानों के संग साझेदारी में, यह सजीव प्रक्षेत्र प्रदर्शन करता है।

परिवर्तन पोषक वाटिका और सब्ज़ी की खेती

परिवर्तन ने ग्रामीणों में पोषण वृद्धि के लिए कार्यक्षेत्र के गाँवों में प्रत्येक समुदाय परिवार के हिस्से में पोषण वाटिका लगाने का स्वप्न देखा है। सर्वे बताते हैं कि इस क्षेत्र की महिलाओं और बच्चों के भोजन में उचित पोषण की बहुत कमी है। जबकी परिवर्तन कार्यक्षेत्र के गाँवों में लगभग 90% से ज्यादातर आय के स्रोत कृषि और पशुपालन पर आधारित हैं लेकिन फिर भी यह समस्या बनी रहती है। इसका कारण उन्ही परंपरागत फसलों की खेती पर ध्यान रहा है जो आय के बेहतर स्रोत प्रदान करें, इससे लेकिन अतिरिक्त पोषण युक्त खाद्य पदार्थ उपेक्षित हो रहे थे। अतः परिवर्तन द्वारा पोषण हस्तक्षेप का उद्देश्य निर्धारित हुआ जिससे कुपोषण से मुकाबला किया जा सके और लोग इसके लिए बाज़ार पर निर्भर न रहें। खुद सब्जियाँ उगाएँ और पोषण के प्रति आत्मनिर्भर बनें।

योजना के तहत,लगभग 500 प्रतिभागियों को उनके घर के सामने की खाली पड़ी जमीन या कृषि भूमि में थोड़ी जगह निकालकर पोषण वाटिका विकसित करने की जानकारी प्रदान की गई और समुचित प्रशिक्षण दिया गया। उनमें से 80 प्रतिभागियों ने अपने घर के सामने और खेत में पोषक वाटिका का निर्माण किया जिसका परिणाम अत्यंत सुखद रहा। लाभार्थियों को पूरे वर्ष ताज़ी साग- सब्जियाँ और फल; भिन्डी, लोबिया, हरा मटर, बैंगन, पालक, मूली, गाजर, मेथी, धनिया, नेनुवा, लौकी, करेला, सहजन, अमरुद, पपीता,आदि बहुलता में प्राप्त हुआ।

पौष्टिक और जैविक भोजन की उपलब्धता के अलावा इस योजना ने परिवार के लिए आय का एक अतिरिक्त स्रोत भी निर्मित किया। भोजन पर होने वाले घरेलू खर्च में से सब्ज़ी खरीदारी में लगभग 20-25 % कमी हुई।इसके अलावा कुछ लोगों ने ताज़ा उपज में से 3-4 किलो की अतिरिक्त फसल को हर 4- 5 दिनों के अंतराल पर बाज़ार में बेचा और धन लाभ अर्जित किया।

किसानों ने राजमा को नगदी फसल के रूप में अपनाया

राजमा आमतौर पर पहाड़ी क्षेत्रो में खरीफ मौसम की फसल के रूप में उगाया जाता रहा है। लेकिन हाल के वर्षो में वैश्विक तापमान में अनिश्चितता के प्रभाव के कारण नए या गैर - पारंपरिक क्षेत्र भी अब राजमा उत्पादन के क्षेत्र बन रहे हैं। परम्परागत फसल व्यवस्था-धान, गेंहू, मक्का, सरसों की खेती अब बेहद चुनौतीपूर्ण हो गई है। ऐसे में पोषण और खेती को और अधिक लाभकारी बनाने के उद्देश्य से परिवर्तन कृषि इकाई द्वारा पिछले वर्ष बंगरा गाँव के कृषकों-उमाशंकर सिंह, जीतेन्द्र सिंह, प्रदीप सिंह, बिरेन्द्र यादव के खेत पर राजमा का प्रक्षेत्र प्रदर्शन का आयोजन किया गया। बाद में परिवर्तन हरियाली कृषि ज्ञान केंद्र ने राजमा की फसल में अनुशंसित खेती के पैकेज को अपनाने में किसानो की मदद की और 1.5 किलो /कट्ठा बीज का उपयोग, हल्की सिंचाई तथा पत्तियाँ पीली होने पर नैनो नाइट्रोजन छिड़काव की सलाह दी। इसके परिणाम बहुत अच्छे रहे, जिसके पश्चात् बंगरा गाँव के किसानों ने राजमा उगाना शुरू कर दिया और इसके सफल उत्पादन व बाज़ार में आसान बिक्री से प्रेरित होकर अन्य किसानों ने भी राजमा को नगदी फसल की खेती के रूप में अपनाया है। इससे राजमा की बुवाई का क्षेत्र साल-दर- साल और बढ़ रहा है।

किसानों की प्रतिक्रिया;

"हमें परिवर्तन हरियाली कृषि ज्ञान केंद्र से बहुत मदद मिली और आज हम आज पौष्टिक और आर्थिक लाभ देने वाली फसल उगा रहे हैं।"

"फसल कम समय में पक कर तैयार हो जा रही है। क्षेत्र के स्थानीय अभ्यास की तुलना में यह फसल उत्पादन में उत्कृष्ट है।"

"क्षेत्र के लोगों को स्वादिष्ट और सुपाच्य प्रोटीन मिल रहा है और इस फसल को उगाने वाले परिवारों को आर्थिक लाभ मिल रहा है जिससे किसानों का जीवन स्तर भी बढ़ रहा है।"

राजमा खेती को नगदी फसल के रूप में अपनाया - जीतेंद्र सिंह

मै जीतेन्द्र सिंह ग्राम बंगरा प्रखंड जीरादेई सिवान का निवासी हूँ। परिवर्तन कृषि इकाई से जुड़ कर परम्परागत रूप से कर रहे खेती के तौर - तरीकों में बदलाव करके आज एक सफल प्रगतिशील किसान का मुकाम हासिल कर लिया हूँ।

कृषक जीतेन्द्र सिंह ने अपनी सफलता की कहानी को बताते हुए कहा -"मैं हर साल जानकारी के आभाव में परम्परागत रूप से खेती कर रहा था और बेहतरीन फसल उगाने के लिए कड़ी मेहनत के बावजूद भी मुझे कम उत्पाद मिलता था, लागत अधिक आती थी। सही उत्पादन प्राप्त करने के लिए मैं परिवर्तन की कृषि इकाई से जुड़ा और नए सिरे से खेती करना शुरू किया ।"

श्री जीतेन्द्र ने अपनी खेती के बारे में विस्तारपूर्वक समझाते हुए बतलाया कि परिवर्तन से जुड़ने के बाद उन्होंने रोपी जाने वाली फसलों, उन्नत खेती के तरीकों को जाना और समझा कि उन्हें अपने खेती की सोच के बारे में क्या क्या बदलाव करना चाहिए। वे कहते हैं कि आजकल उन्हें राजमा की खेती बेहद पसंद आ रही है क्योंकि राजमा नगदी फसल है और वह बहुत आर्थिक लाभ दे रहा है। वे कहते हैं कि सबसे आश्वस्तकारी बात यह है कि राजमा फसल को बेचने के लिए कहीं बाहर नहीं जाना पड़ता है। इसकी बिक्री स्थानीय बाज़ार में आसानी से हो जाती है। *"राजमा की खेती से मुझे मुनाफा अधिक प्राप्त होता है।"*

वे परिवर्तन की विभिन्न कृषि गतिविधियों में नियमित भाग लेते रहते हैं। परिवर्तन परिसर में आयोजित रबी कार्यशाला में उन्होंने भाग लिया जहाँ पर उन्हें गेहूँ, सरसों की खेती के अलावा अन्य रबी फसलों और सीजन में राजमा की वैज्ञानिक रूप से खेती करने के बारे में बतलाया गया। जिसकी खेती उन्हें काफी दिलचस्प लगी।

अर्जित तकनीकी ज्ञान से प्रभावित होकर उन्होंने सर्वप्रथम 5 कट्ठे में राजमा की खेती की जिसमें से उन्होंने 117 किग्रा. राजमा प्राप्त हुआ जिसे स्थानीय बाज़ार में 90 रूपये किग्रा. की दर से बिक्री कर उन्हें 10530 रूपये प्राप्त हुए। *"5 कट्ठे राजमा की खेती करने में कुल 2600 रूपये की लागत आई जिससे मुझे शुद्ध रूप से 7930 रु. प्राप्त हुए।"* कृषक जीतेन्द्र का कहना है कि राजमा फसल अन्य फसलों की अपेक्षा कम लागत में अधिक मुनाफा देने वाली फसल है। उनकी इस लाभ वाली यात्रा से प्रभावित होकर गाँव के अन्य कृषक भी अब राजमा की खेती करने लगे हैं। राजमा की खेती में कम पानी और कम कीट और रोग लगते हैं।

कृषक जितेंद्र कहते हैं-*"मैं इसकी खेती को और बढ़ा रहा हूँ, साथ- साथ अन्य किसानों को भी राजमा की फसल लगाने के लिए प्रेरित करता हूँ। परिवर्तन के कृषि विशेषज्ञों के तकनीकी सहयोग से मैंने अब आधे एकड़ में आम का बाग भी लगाया है साथ-साथ मेरे धान, गेंहू, मक्का के उत्पादन में भी बढ़ोत्तरी हई है ।मैं अपनी इस सफलता के लिए हमेशा परिवर्तन का शुक्रगुजार रहूँगा।"*

-विवेक कुशवाहा, संचालक कृषि

शिक्षा

परिवर्तन शिक्षा इकाई, कार्यक्षेत्र के ग्रामीण सरकारी और गैर सरकारी स्कूलों के बच्चों को वैकल्पिक शिक्षा प्रदान करने के लिए अनेक योजनाएँ एवं कार्यक्रम आयोजित करती है। परिसर में, समुदाय में और स्कूलों में जाकर यह शिक्षा के उन रिक्त स्थानों की पूर्ति करने का प्रयास करती है जो स्कूल करीकुलम में मौजूद होते हैं। कविता, कहानी, पेंटिंग, क्राफ्टवर्क, विज्ञानशाला, गणितशाला तथा समृद्ध पुस्तकालय के माध्यम से यह समुदाय में सकारात्मक हस्तक्षेप करती है और बच्चों, अभिभावकों, शिक्षकों एवं समुदाय के लोगों की सहमति एवं सहभागिता से बतौर उत्प्रेरक कार्यरत रहती है।

बालघर आँगन

शिक्षा की यह उप इकाई, क्षेत्र के आँगनवाड़ी केंद्रों के साथ मिलकर 3-6 वर्ष के बच्चों के सर्वांगीण विकास की दिशा में कार्य करती हैं। सेविकाओं एवं सहायिकाओं के सहयोग से यह इकाई बच्चों की स्कूल पूर्व रचनात्मक शिक्षा, पोषण, स्वास्थ्य एवं स्वच्छता संबंधित जागरूकता विकसित करने और उन्हें अमल करने हेतु कार्यरत रहती हैं।

गुनगुन कार्यशाला

इस कार्यशाला का उद्देश्य, कार्यक्षेत्र की सेविकाओं एवं सहायिकाओं को नई-नई गितिविधियों के माध्यम से शिक्षा को बच्चों के बीच संप्रेषित करना है।

आँगनवाड़ी सेंटर पहुचने के बाद वहाँ पर कार्यक्रम को शुरू किया गया।प्रार्थना-*तुम्ही हो माता-पिता तुम्ही हो,* को सेविकाओं और सहायिकाओं के बीच किया गया।बहुत ही सुंदर तरीके के साथ वाचन किया। तत्पश्चात बाल गीत *प्यासा कौआ*, सामूहिक रूप से गाया गया। कहानी -चाँद का सेर के वाचन के दौरान बच्चे शांतिपूर्वक बैठकर कहानी सुनते रहे और बीच बीच में सवाल जवाब भी करते रहे। यह देखना सुखद था।

अंत में बच्चों, सेविकाओं तथा सहायिकाओं को अलग- अलग समूह में बाँटकर बच्चों से ही हाथ के पंजे का आकार और कोलाज गतिविधि को करवाया गया। इस गतिविधि में बच्चों की ऊर्जा देखने लायक थी।।

सेविका का फीडबैक

सेविका दीपमाला जी का कहना था -"जब हमलोग एक जगह से दूसरे जगह जाते हैं तो एक दूसरे को देखकर आदमी को बहुत कुछ सीखने को मिलता है। मेरे साथ यही हुआ।"

सेविका	सहायिका	बच्चें
3	3	62

सहायिका प्रशिक्षण

सहायिका अपने कार्यस्थल पर सही समय पर पहुँचें, अपने कार्य स्थल को साफ-सफाई से रखें, बच्चों को सही पोषण के लिए मिली गई जिम्मेदारियों का निर्वहन सजगता से करें इन्ही महत्त्वपूर्ण बिंदुओं को लेकर यह प्रशिक्षण आयोजित किया गया। इसके अतिरिक्त, सेविकाओं की अनुपस्थिति में केंद्र पर पठन पठान में उनकी क्या भूमिका हो यह भी चर्चा का मुद्दा रहा। इस बार के सहायिका प्रशिक्षण में बहुत ज्यादा संख्या में सहायिकाओं ने भाग लिया। पहले सहायिकाएं प्रशिक्षण में आने से कतराती थीं पर इस बार उन्होंने बढ़-चढ़ कर भाग लिया।

लगभग 65 सहायिकाओं ने प्रार्थना गीत के बाद व्यायाम किया और दिशाओं के बारे में जानकारी प्राप्त की। स्वच्छता और केंद्र और बच्चों की साफ-सफाई पर जानकारी साझा की गई। उसके बाद *एक मुर्गी और एक बटेर, एक डाल बैठा बंदर* बालगीतों को लयबद्ध तरीके से करवाया गया और *खिचड़ी* कहानी का पाठ किया गया जो सहायिकाओं को बहुत रुचिकर लगा। अंत में श्री राजवर्धन ने *कौवा और मटका* का पपेट बनवाया और उसके माध्यम से उसकी मनोरंजक कहानी सुनाई। सेविका प्रशिक्षण कार्यक्रम बेहद सफल रहा और कार्यक्रम सम्पन्न होने पर हमें उत्साहजनक प्रतिक्रियाएँ प्राप्त हुईं।

मीना देवी -सहायिका *"पहली बार परिवर्तन आई हूँ और सबसे मिलने के लिए उत्सुक भी थी। सभी से मिलकर बहुत अच्छा लगा।"*

सोनी देवी- सहायिका -*"मै तो कभी भी परिवर्तन आई ही नहीं थी आज पहली बार आई हूँ। आना तो कई बार चाहती थी लेकिन किसी कारण आने से वंचित रह जाती थी। यहाँ सहायिका प्रशिक्षण भी सेविका प्रशिक्षण की तरह ही बहुत अच्छे से हुआ। अब मैं अपने केंद्र पर और अच्छा से बच्चो की देखभाल करुँगी, और सेविका के नहीं रहने पर भी मैं अपने कर्तव्यो का निर्वाह और अच्छी तरह से करुँगी।"*

सेविका प्रशिक्षण: 27-28 फरवरी 2023

इस कार्यशाला का उद्देश्य पठन सामग्री का निर्माण और नई तकनीक से उसके सम्प्रेषण में सेविकाओं को सक्षम बनाना था। इस कार्यशाला को संचालित करने पटना D.P.S.से चार प्रशिक्षिकाएँ-सीमा चौधरी, आईस आलम, कुमारी अर्चना एवं बंदना सिन्हा आई और पहले दिन सभी सेविकाओं के साथ परिचय के बाद कविता कहानी, रोल प्ले किया गया।गणित की गतिविधियाँ जिनमें पजल और गिनती शामिल थीं, उन्हें भी करवाया गया। वैज्ञानिक प्रयोग कर वायु दाब जैसे संदर्भ भी समझाए गए।

किचेन गतिविधि बहुत दिलचस्प रही जिसने पर्यावरण की समझ को विकसित किया-बिन आग हम क्या क्या भोजन बना सकते हैं? चना और मूंग को अंकुरित कर हम बच्चो को कैसे संतुलित आहार दे सकते हैं?

उपस्थित सेविकाएँ

दिन	पंचायत	सेविकाओं कि संख्या
27 फ़रवरी 2023	10	102
28 फरवरी 2023	10	102

सेविकाओं की उपस्थिति का बढ़ना और उत्सुक हो गतिविधियों में भाग लेना कार्यशाला की सफलता को दर्शाता है।

प्रतिक्रियाएँ

दीपशिखा देवी *"हमलोगों को सेविका प्रशिक्षण का बहुत दिनों से इंतजार रहता है क्यों कि यहाँ आने के बाद हमको नई-नई गतिविधि सीखने को मिलता है फिर वही गतिविधि हम अपने बच्चों को सिखाते हैं ।इस प्रशिक्षण में हमलोग बहुत सी गतिविधि सीखे।"*

गुड़िया देवी- *"हमलोग बच्चों के साथ काम करते हैं, पर जब भी इस प्रशिक्षण में आते हैं तो सभी परेशानी भूल कुछ समय के लिए खुद बच्चा बन जाते है और खूब मस्ती करते है। पर ये सभी मस्ती हमारे कामों से जुड़ी है एवं बच्चों के लिए लाभदायक है। खेल खेल के माध्यम से हम बच्चों को बहुत कुछ सिखा सकतें है ये जानकारी मिली"।*

जीरादेई ब्लॉक के सुपरवाइजर का कहना था-*"मैने बहुत से प्रशिक्षण देखे हैं पर ऐसा प्रशिक्षण आज से पहले कहीं नही देखा यह बहुत खुशनुमामाहौल में दिया जा रहा है।"*

नन्हे कदम कार्यशाला पर अभिभावक –*"फलक की मम्मी बोल रही थी कि जब फलक परिवर्तन से आती है तो वहाँ की सारी गतिविधि अपनी छोटी बहन को सिखाती है ।"*

सेविका	सहायिका	बच्चें	अभिवावक
1	1	40	32

इस कार्यशाला में बच्चों की जितनी संख्या कविता, कहानी प्रदर्शित करने में और दर्शकों के रूप में रही उससे कहीं अधिक क्षेत्र के अभिभावकों की संख्या रही। बच्चों के कार्यक्रम को अभिभावकों ने बहुत ही शांति पूर्वक देखा और बच्चों का मनोबल बढ़ाया।

बालघर किसलय

यह उप इकाई कक्षा 1-5 वीं तक के बच्चों के भीतर छिपे रचनाकार को उड़ान देती है। नियमित रूप से परिवर्तन परिसर, समुदाय एवं आसपास के सरकारी स्कूलों में सभी की सुविधा एवं सहमति से यह इकाई कविता सत्र, कहानी पाठ,एवं लेखन संबंधित प्रतियोगिताओं का आयोजन करती है। इसके अलावा यह प्रतिष्ठित लेखकों एवं साहित्यकारों को परिवर्तन परिसर में आमंत्रित कर लेखन की कार्यशालाएँ भी आयोजित करती है।

चहकने की ललक कार्यशाला : 3-2-23

संचालक आर्या सिंह के साथ इस कार्यशाला का आयोजन किया गया। *चहकने की ललक* बच्चों का अपना दीवाल अखबार है। जिसमें बच्चे कार्यशाला में दी गई थीम पर कविता, कहानी, लिखते हैं और चित्र बनाते हैं। जिससे इस अखबार को सजाया और बनाया जाता है। इसमें बुझौवल और चुटकुले भी शामिल रहते हैं।

प्यार और धीरज से वह निखर गया

बालघर आँगन का मस्त मौला बच्चा है दीपू। जब आया था तो क्लास के दौरान कभी स्थिर नहीं बैठता था। कभी खिड़की के पास खड़ा होता थाऔर बाहर ही देखता रहता था। कभी जहाँ बैठा होता था वहाँ से कहीं और पाया जाता था। इसकी शैतानियों में कभी कोई कमी नहीं आती

थी। एक दिन वह परिवर्तन की गाड़ी, (जो कि बच्चों को घर से क्लास के लिए परिवर्तन परिसर लाने के लिए बच्चों के घर जाती थी) की आवाज सुन किसी अनजान पड़ोसी के घर में छिप गया। दूसरे दिन किसी के सरसों के खेत में छिप गया। जब उसे ढूंढ कर क्लास लाया गया तो उससे पूछा गया –*"तुम ऐसे क्यों छिप गए थे? तो उसने मासूमियत से जवाब दिया-मम्मी ने कहा था।"*

लेकिन इस वर्ष दीपू ने 26 जनवरी के कार्यक्रम में भाग लिया और एक कविता प्रस्तुत की –*हम सब के प्यारे बापू*। सब लोगों को उसके आत्मविश्वास और मनभावन अंदाज पर बहुत प्यार उमड़ा। एक चुलबुला बच्चा इतनी तन्मयता से कविता पढ़ रहा था, यह सभी के लिए आश्चर्य की बात थी। सभी ने उसकी खूब प्रशंसा की।

यहीं से उसमें बदलाव की शुरुआत हुई। और उसकी प्रतिभा निखर कर सामने आयी। अब वह शैतानियाँ कम करता है और नया सीखने को तत्पर रहता है। परिवर्तन से उसका जी जुड़ गया है और यहाँ आने को उत्सुक रहता है।

-मधुबाला देवी संचालक बालघर आँगन

कविता, कहानी की दुनिया में ही बनाऊँगी अपनी जगह

प्रियंका कुमारी, बाबू के भटकन गाँव की रहने वाली, कक्षा 5 की छात्रा है।यह अपनी बड़ी बहन के साथ नियमित रूप से परिवर्तन आया करती थीं। इनकी बड़ी बहन परिवर्तन की खेल इकाई उमंग से जुड़ी हुई थीं। दीदी परिवर्तन में कबड्डी खेलने आती हैं। प्रियंका बहुत होशियार हैं। वे पढ़ने में भी बहुत अच्छी हैं। उनका मन रचनात्मक लेखन में खूब लगता है। जब वे क्लास में आती हैं तो हमेशा एकाग्रचित्त होकर कुछ लिखती रहती हैं।

प्रियंका का भाई उनके साथ जब आता है तो थोड़ी-थोड़ी शैतानी करता है। फिर भी परिवर्तन आने पर प्रियंका उसे बड़े लोगों की तरह जिम्मेवारीपूर्वक लेकर आती हैं और उसका ख्याल रखती हैं।

परिवर्तन आने पर प्रियंका सिर्फ किसलय क्लास में बनी रहती हैं बाकी किसी क्लास में नही जाती हैं। यह पूछने पर कि वे ऐसा क्यों करतीं हैं, वे कहती हैं-*"मुझे कहानी और कविता पढ़ना लिखना बहुत अच्छा लगता है।इसी में इतना मन लगता है कि कहीं और जाने का न तो समय मिलता है न इच्छा रहती है।"*

एक बार प्रियंका को गाल पर थोड़ी भारी चोट लग गई थी लेकिन दर्द और असुविधा के बावजूद वह फिर भी परिवर्तन आती रही थीं। प्रियंका का मानना है- *"परिवर्तन में सभी बच्चे आना पसंद करते हैं क्योंकि यहाँ स्कूल से अलग पढ़ाई होती है और कुछ न आने पर पिटाई नही होती बल्कि बिना डाँट-डपट के प्यार से समझाया जाता है। इससे पढ़ने लिखने का उत्साह दोगुना हो जाता है यहाँ बहुत सारी ऐसी चीजें भी रखी रहती हैं जिनसे हम खेल भी सकते हैं, जैसे ब्लॉक्स। यहाँ का माहौल इसीलिए बहुत मजेदार बन जाता है।"*

प्रियंका बड़ी होकर लिखने पढ़ने से जुड़ा कुछ काम करना चाहती हैं।

-आर्या सिंह, संचालक बालघर किसलय

बच्चे बड़े मनोयोग से इस कार्यशाला में भाग लेते हैं।इस बार लगभग 20 बच्चों को इस कार्यशाला से जोड़ा गया। सबसे पहले बच्चो को कार्यशाला के बारे में बताया गया। उसके बाद बच्चो के बीच निर्धारित थीम से जुड़ी कहानी और कविता सुनाई गई।

फिर उनकी कल्पनाशक्ति को उकसाने के लिए *चाँद का कुर्ता* कविता सुनाई गई जिसे प्रतिष्ठित कवि, रामधारी सिंह दिनकर ने लिखा है। कविता को बच्चों ने बहुत पसंद किया और खुद भी इसी तरह का कुछ रचने की इच्छा प्रकट की। कहानी और कविता समाप्त होने के बाद बच्चो को पेज, पेंसिल तथा अन्य सामग्री दी गई और बच्चों ने उत्साह से थीम पर आधारित लेख, कविता और पहेली रची तथा चित्र बनाए जिन्हें आगामी चहकने की ललक में शामिल किया जाएगा।

खेल – खेल में कार्यशाला : 17-11-022

इस कार्यशाला में बच्चों को को खेल-खेल के माध्यम से अपनी सर्जनात्मकता को विकसित करने का अवसर प्रदान किया जाता है तथा परिवर्तन की शिक्षा इकाई के कार्यक्रम से जुड़ने को प्रेरित किया जाता है। इस बार 45 बच्चों ने प्राथमिक विद्यालय खेम भटकन में आयोजित कार्यशाला में भाग लिया।

कार्यशाला के बारे में जानकारी देने के बाद, *आइसब्रेकर, कूड़ा मत फेंको,* खेल घरौंदा के संचालक श्री राजवर्धन द्वारा कराया गया। कहानी – *अक्कू हुई गुस्सा,* जिसके लेखक- विनायक वर्मा हैं को श्रीमती मधुबाला द्वारा सुनाया गया और कहानी – *गवैया गधा* जिसके लेखक- जगदीश जोशी हैं को हाव-भाव के साथ बच्चो के बीच श्री दीपक द्वारा प्रस्तुत किया गया। इसके बाद कविता-*एक डाल बैठा बंदर* बच्चो को सुनाई गई। बच्चो ने इसके बाद पेपर क्राफ्ट से मुखौटा बनाना भी सीखा।

बहुत सारे बच्चे इस कार्यशाला के बाद परिवर्तन से जुड़ने की इच्छा ज़ाहिर कर चुके हैं।

पुस्तकालय

परिवर्तन परिसर स्थित समृद्ध पुस्तकालय, क्षेत्र में साहित्य अनुराग और पढ़ने के लुप्तप्रायः अभ्यास को पुनर्जीवित करने का प्रयास करता है। परिसर में तो यह पाठक उन्मुख पुस्तकालय सभी उम्र के बच्चों, युवाओं और बुजुर्गों को अपनी

छिपी प्रतिभा बाहर आती ही है

पवन से पहली मुलाकात पुस्तकालय के एक कार्यशाला (कहानी पाठ) के दौरान हुई थी। यह बच्चा उसी समय से पुस्तकालय में रूचि लेने लगा था। संथू गाँव में यह रहता है। वहीं जाकर इसके अभिभावकों से बात की गई। पवन के पिताजी एक किसान है। वे अपने परिवार का भरण पोषण खेती करके ही करते हैं। उनलोगों की सहमति के बाद यह बच्चा परिवर्तन आने लगा।

संथू सामुदायिक क्लास के अंतर्गत भी इसकी भागीदारी रहती थी लेकिन शुरु -शुरु में में वह बात करने में हिचकिचाता था। पुस्तकालय से जुड़ने के बाद इस बच्चे की हिचकिचाहट बहुत हद तक ख़त्म हो चुकी है। यह सभी के लिए सुखद बात है।

पवन की माँ कहती हैं-"अब पवन अपने छोटे भाई और कुछ साथियों के साथ बहुत सी गतिविधियाँ करता रहता है जैसे- वाक्य की मदद से कहानी निर्माण, मूक गतिविधि और बहुत कुछ। इस सब के अलावा पवन खाली समय में कुछ न कुछ लिखते रहता है। सबसे जरूरी बात है कि पवन के बात करने के तरीके में काफी बदलाव आया है। कहने का मतलब है एक बार भी बुलाने या किसी काम को कहने पर ना नहीं कहता है।"पवन के दादाजी (सामुदायिक क्लास के दौरान पास में ही रहते हैं) काफी बूढ़े हो चले हैं, वे भी कहते हैं- "पवन कहानी और कविताओं से जब से जुड़ा है एक दम समयनिष्ठ हो गया है। अपने सभी काम समय पर करता है। विद्यालय के गृहकार्य से लेकर घर के कार्यों में हाथ बँटाना पिता का सहयोग करना।"

पवन के व्यक्तित्व में आए इन बदलावों से मुझे भी हौसला मिलता है। मैं दुगुने उत्साह से पुस्तकालय को सक्रिय करने में जुट जाता हूँ।

-दीपक कुमार, संचालक पुस्तकालय

कार्यशालाओं, कथा, कविता पाठ के आयोजनों और मज़ेदार गतिविधियों से आकर्षित करता ही है, समुदाय में भी यह घूम-घूम कर अपनी गुल्लक पिटारा योजना से सभी को किताबों की दुनिया से जोड़ने का प्रयास करता है।

हिन्दी दिवस 14 सितंबर 22

मातृभाषा हिन्दी की गरिमा को बनाए रखने के लिए और इसके प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए प्रचार- प्रसार कर बच्चों को जोड़ना अत्यावश्यक है। इसी के मद्देनजर इस दिवस को एक समारोह के रूप में प्रत्येक वर्ष मनाया जाता है। इस वर्ष भी परिवर्तन ने गतिविधिपूर्ण आयोजन कर भाषा से बच्चों का जोड़ने का प्रयास किया।

हिंदी दिवस मनाने के लिए परिवर्तन कार्यक्षेत्र के 10 विद्यालयों (मध्य तथा उच्च विद्यालयों) से लगभग 50 बच्चे परिसर आए।। प्रत्येक मध्य विद्यालय से 5 बच्चे आये थे।

सर्वप्रथम श्री ब्रजेश द्वारा विभिन्न विद्यालयों से आए बच्चों का पंजीकरण किया गया।

मंच सञ्चालन श्री सुधीर ने किया। श्री दीपक ने सभी बच्चों का स्वागत किया गया और हिंदी दिवस का परिचय दिया - "*हिंदी केवल हमारी भाषा ही नहीं, बल्कि हमारी पहचान है। एक ऐसी समृद्ध भाषा, जिसमे अभिव्यक्ति की अपार क्षमता है।*"

अनेक गतिविधियों के बाद इसके बाल लेखकों-पवन,समीर तथा सिमरन को मंच पर आमंत्रित किया गया और इन तीनो ने बारी बारी से *चकमक* पत्रिका में अपने लेखन के अनुभव सभी बच्चों के साथ साझा किए। प्रतियोगी गतिविधियों के पुरस्कार अंतिम चरण में बच्चों की तालियों के बीच बाँटे गए।

सर्वप्रथम मध्य विद्यालय भरौली के बच्चों को श्री राजवर्धन द्वारा पुरस्कृत किया गया और श्री ब्रजेश द्वारा मध्य विद्यालय नरेन्द्रपुर के बच्चों को पुरस्कृत किया गया।

पुस्तकालय वार्षिक कार्यशाला: 03.03.23

बच्चों मे बाल साहित्य की किताबों के प्रति रूचि उत्पन्न करना तथा बच्चों

में पढ़ने की शैली को समृद्ध करने के उद्देश्य यह कार्यशाला आयोजित की जाती है। इस वर्ष इसमें कार्यक्षेत्र के 8 मध्य विद्यालयों के 53 बच्चों ने भाग लिया। सभी बच्चे कक्षा 6-7 वीं के थे।

सर्वप्रथम एक गीत *किताबें करती हैं बातें* के साथ बच्चों का स्वागत किया गया जिसे रंगमंडली के सदस्यों द्वारा प्रस्तुत किया गया। तद्पश्चात बच्चों को अलग अलग 7 समूहों में बांटकर पुस्तकालय भ्रमण कराया गया।

भ्रमण के बाद शिक्षा इकाई के सभी साथी अपने अपने समूह के साथ पुस्तकालय में पहले से निर्धारित स्थान पर बैठ गए तथा बच्चों को भी दिशा निर्देश दिया गया कि बारी-बारी से प्रत्येक 15 मिनट बाद अगले गतिविधि में शामिल होने हेतु अगले स्टाल पर चले जाएँ जहाँ शिक्षा के साथी द्वारा गतिविधियों का आयोजन किया गया था।

झरोखा

झरोखा शिक्षा की वह उप इकाई है जो समुदाय के बच्चों और परिवर्तन कार्यक्षेत्र के सरकारी और गैर सरकारी स्कूलों के बच्चों को कंप्यूटर का तकनीकी ज्ञान उपलब्ध कराती है और भाषा सीखने के डिजिटल टूल डूओलिंगों के माध्यम से अंग्रेज़ी और हिन्दी भाषा सीखने का अवसर प्रदान करती है। साक्षर होने का भी यह सरल तरीका है और इसे सीखने पर स्वतः ही छात्र कंप्यूटर का प्रारम्भिक ज्ञान प्राप्त कर लेता है।

इस सत्र में झरोखा क्लास से एक नया कार्यक्रम जुड़ रहा है। यह कार्यक्रम समुदाय के युवा, किशोर और किशोरियों के लिए होगा। इस कार्यक्रम का नाम DCL है। इस कार्यक्रम के तहत सभी किशोर एवं किशोरियों को कंप्यूटर का बुनियादी ज्ञान दिया जाएगा इसके बाद वे कंप्यूटर पर अपना काम स्वयं कर सकेंगे। इस कार्यक्रम की अवधि 6 माह है। इस 6 माह में वे वह सब चीजें सीख जाएँगे जिससे उन्हें कंप्यूटर चलाने में कोई परेशानी नहीं हो।

झरोखा क्लास: 2022-2023

2022-2023 के सेशन के प्रथम सत्र में कुल 134 बच्चे जुड़े। द्वितीय बैच में कुल 124 बच्चे जुड़े। दोनों बैच मिलाकर कुल 258 बच्चे जुड़े। प्रथम बैच में कुल 76 बच्चों को प्रमाण पत्र दिया गया जब कि दूसरे बैच में कुल 58 बच्चों को प्रमाण पत्र दिया गया।

जो बच्चे झरोखा क्लास से जुड़े थे समय-समय पर उनकी जाँच भी हुई। उनकी वर्कशीट को देखने से यह पता चलता है कि बच्चे अच्छे से पढाई करते थे इसलिए उनका परिणाम भी अच्छा हुआ। छःमाह में इनकी कुल तीन जाँच हुई। उनके द्वारा बनाए गए उत्तर की जाँच कर उनको ग्रेड दिया गया। बालघर किसलय के बच्चों की क्लास भी यहाँ चली। और बच्चों ने कंप्यूटर पर खुद निबंध लिखने में सफलता हासिल की।

सहयोगनी क्लास:

महिला समाख्या इकाई की सहयोगिनियाँ झरोखा में साप्ताहिक क्लास के लिए जुड़ीं। वे बुनियादी कंप्यूटर ज्ञान प्राप्त करने के लिए नियमित आती हैं। सभी सहयोगिनियाँ पहली बार कंप्यूटर सीख रही हैं इसीलिए शुरु- शुरु में उनको विषय याद रखने में परेशानी होती थी लेकिन बार-बार अभ्यास कर वे बहुत कुछ सीख गई हैं।

अब वे कंप्यूटर पर अपना काम स्वयं कर लेती हैं और अपना प्रतिवेदन भी किसी के साथ मेल के द्वारा साझा करने में सक्षम हो गई हैं। इन सभी चीजों को प्राप्त करने में और इनको कंप्यूटर सिखाने के लिए बहुत प्रयास किया गया लेकिन प्रयास के सुंदर परिणाम सामने आए हैं। वे अब अपने को सूचनाओं से लैस रखती हैं, स्वयं रिपोर्ट लिखती हैं और आत्मविश्वास से भरी रहती हैं।

परिवर्तन आगे ले जाने को साथ खड़ा है

झरोखा क्लास में वैसे तो हर समूह में अच्छे खासे बच्चे आते हैं।उनमें से कुछ बच्चे अच्छे स्वभाव के होते हैं सुशील होते हैं और कुछ बच्चे बहुत ही नटखट स्वभाव के होते हैं। इस वर्ष अचानक जब झरोखा क्लास शुरू हुआ तो मेरा ध्यान एक लड़के पर गया जो सभी बच्चों से अलग दिखता है। वह लड़का मृदभाषीऔर बहुत सुशील है। वह इतना सीधा है कि अपने सहपाठियों से भी ज़रूरतभर की बाते ही करता है। उसके समूह में 10 से 12 बच्चे आते हैं लेकिन वह किसी से कोई विशेष मतलब नहीं रखता है।

जब वह अपने कक्षा में आता है ज़्यादा समय वह अपना लेसन बनाने में बिताता है।और आते ही सबसे पहले धीमी आवाज में हमको प्रणाम करता और फिर अपने कंप्यूटर की तरफ चला जाता। और जितनी देर क्लास में रहता है वह किसी से कुछ भी नहीं पूछता है, जब हम उससे पूछते तो हमको कहता है- सर ये कैसे बनेगा? जब कभी हमारी उससे बात होती तो ज्यादा समय तक वो हाँ या ना में जवाब देता।

एक दिन हमने उसके घर परिवार के बारे में पूछना शुरु किया तो पता चला की उसके पिता जी का स्वर्गवास हो गया है और वे चार भाई और एक बहन है। इससे तीन भाई बड़े हैं और यह छोटा है। धरमपुर गाँव में रहने वाले इस बालक का नाम मुन्ना कुमार भगत है।

इसकी कहानी जानकर बतौर शिक्षक हमारे मन में इसकी शिक्षा दीक्षा को लेकर चिंताएँ उमड़ती है। लेकिन फिर हम सोचते हैं कि परिवर्तन से जुड़े रहने पर इसकी पढ़ाई हो जाएगी। और मार्गदर्शन के लिए हम हैं ही। हमें पूरी उम्मीद है कि परिवर्तन के सहयोग और इसकी खुद की इच्छाशक्ति के बल पर यह बहुत आगे जाएगा और इसका भविष्य उज्ज्वल होगा।

-ब्रजेश सिंह संचालक झरोखा

घरौंदा

घरौंदा शिक्षा की कला उपइकाई है। यह समुदाय के स्कूली बच्चों एवं किशोर किशोरियों को समुदाय में जाकर और परिवर्तन परिसर में कला की बारीकियों से परिचित करवाती है, लब्धप्रतिष्ठित कलाकारों द्वारा समय समय पर कार्यशालाएँ करवाती है और भारत की समृद्ध कला परंपरा से समुदाय को जोड़ती है।

लोककला - गोधन चित्रकला-26 अगस्त 2022

इस कार्यशाला का उद्देश्य बच्चों को लोक चित्रकला से अवगत कराना तह। सिवान जिले में ऐसी बहुत सी लोक चित्रकलाएं हैं जिन्हें चित्रकला का दर्जा हासिल नहीं हुआ है। मध्य विद्यालय बंगरा उज्जैन नियमित क्लास के दौरान इस कार्यशाला को किया गया जिसमे लगभग 37 बच्चों ने भाग लिया।

सर्वप्रथम बच्चों से लोककला के बारे में परिचयात्मक बात की गई। लोककला के बारे में बच्चों कि क्या समझ है और लोककला के प्रति उनकी रूचि कैसी है ? बहुत से बच्चे लोककला का अर्थ नहीं समझ रहे थे, वे मधुबनी पेंटिंग, गौड़ पेंटिंग, मंजूषा इत्यादि जान रहे थे पर यही लोककला है इसे नहीं समझ रहे थे। बच्चों को लोककला का अर्थ बताया गया फिर लोककला को अपने इर्द-गिर्द अपने परिवेश से जोड़कर समझाया गया।

यह बात उभरकर आयी कि सिवान और भोजपुर क्षेत्र में गोधन बाबा की कलाकृति गाय के गोबर से बनाई जाती है तो क्या यह भी लोककला की सूचि में शामिल हो सकती है ? बच्चों ने गोधन बाबा और पीढ़िया के बारे में चर्चा की। सभी बच्चों के साथ गोलाकार में बैठ गए और बताया कि महिलाएं जो कलाकृतियाँ बनाती हैं वे इस प्रकार हैं - घर, गोधन बाबा, गोधाईन, गोधन बाबा का बेटा-बेटी, सिपाही, गोसार, सिलवट - लोढ़ा, ओखली, दिया, चूल्हा, सांप और बिच्छु। यह देख लोक कला की जीवन से जुड़े प्रतिबिंब साफ -साफ समझ में आते हैं। तभी लोककला लोक मानस में चिरकाल तक बसी रहती है। यह जानना और पहचानना बहुत दिलचस्प था। इसके उपरान्त सभी बच्चों ने स्वयं भी कलाकृतियों को अपनी परंपरा से जोड़कर बनाने का प्रयास किया।

आउट डोर पेंटिंग

बाह्य चित्रण का उद्देश्य बच्चों को बंद कमरों से बाहर निकालकर प्रकृति के करीब ला उसकी सुंदरता से परिचय करवाना है। इस तरह बच्चे प्रकृति की सुन्दरता के साथ-साथ कुछ ज़मीनी सच्चाई से भी अवगत होते हैं। बाहरी दुनिया में बच्चों को अपनी कल्पना पर नहीं बल्कि सामने जो है उसी को बनाने के लिये बताया जाता है। चित्र के साथ-साथ बच्चों को उन सभी अच्छी बुरी चीजों का रंग रूप समझने का मौका मिलता है।

मध्य विद्यालय बंगरा उज्जैन के 8वीं कक्षा के बच्चों को क्लास के बंद कमरे से बाहर मैदान में एकत्रित किया गया। जिससे बच्चे अपने आस-पास के वातावरण में घूम-घूम कर स्थानीय पेड़-पौधे, फूल, पत्ते एवं तरह तरह के भवन इत्यादि को देख उसे ध्यान पूर्वक समझने का प्रयत्न करें। बच्चों को स्वतंत्र छोड़ा गया कि वह अपनी रूचि अनुसार किसी भी जगह जाएँ और उन्हें जो विषय सबसे ज्यादा प्रभावित करता है उसे रेखांकित करें।

सभी बच्चे कुछ देर विद्यालय प्रांगण में अपनी रूचि तलाशते घूमते रहे फिर धीरे धीरे बच्चों ने अपनी रूचि अनुसार विषय का चयन कर उसे रेखांकित करना प्रारंभ कर दिया। कुछ बच्चों ने अपने विद्यालय के प्रांगण में स्थित उच्च विद्यालय के भवन बनाए तो कुछ बच्चों ने अपने मध्य विद्यालय के प्रांगण को चित्रित किया। किसी बच्चे को अपने शिक्षक की मोटर-साईकिल को विषय बनाना ज़्यादा रुचिकर लगा तो बहुत से बच्चे कक्षा किसी एक खिड़की बनाने का प्रयत्न कर रहे थे। कुछ बच्चों ने पास के आँगनवाड़ी केंद्र के भवन को बनाया तो किसी ने पास के चापाकल को।

बच्चों को इस तरह विद्यालय में क्लास से बहार आकार खुले वातावरण में खुल कर आज़ादी के साथ काम करना काफी उत्साहित कर रहा था। उन्मुक्त वातावरण और खुलेपन ने बच्चों को भीतर तक प्रभावित किया।

विद्यालय गर्मी छुट्टी के दौरान किया गया विशेष कला सत्र का आयोजन

विद्यालय में गर्मी कि छुट्टी होते ही घरौंदा द्वारा 25 मई से 5 जून तक 10 दिवसीय एक विशेष कला सत्र का आयोजन किया गया। जिसमें बच्चे अन्य दिनों और करिकुलम के बाहर जाकर, नई तकनीक अपनाकर नयी कला का सृजन कर सकें।

कार्यक्षेत्र के 21 गाँवों और सभी विद्यालयों के बच्चों को इस विशेष सत्र से जुड़ने के लिए प्रेरित किया गया। विद्यालय में गर्मी छुट्टी होने के पहले दिन से ही बच्चे घरौंदा नियमित क्लास में बड़हुलिया, नरेन्द्रपुर, भरौली, खेम-भटकन एवं गोठी के इस विशेष सत्र में शामिल हुए, जिसमे बच्चों को नियमित क्लास से हटकर कुछ नयी रोचक गतिविधि कराई गई। इस गतिविधि में थंब प्रिंट के माध्यम से बच्चों ने अपने हाथ के अंगूठों में रंग लगाकर पेंटिंग की। बच्चे कलाकृतियों में रंग, ब्रश कि जगह अपने अंगूठे से भर रहे थे। यह बच्चों के लिए काफी रोचक था। इसी तरह बच्चे स्प्रे पेंटिंग, नमक से पेंटिंग, लीफ प्रिंट एवं छापाकला भी बड़ी रोचकता के साथ करने लगे।

इस तरह की कला को 5 जून को परिवर्तन परिसर में प्रदर्शनी की तरह लगाया गया। इस प्रदर्शनी में अन्य बच्चों के साथ साथ बच्चों के अभिभावक भी आए और बेहद आनंदित हुए।

बालकों को शिक्षक संवार देते हैं

प्रिंस राजकीय प्राथमिक विद्यालय संथू में पढने वाला पांचवीं का छात्र है। इसके पिता बढ़ई है। जिनका लकड़ियों के सामान बेचने का व्यापार है।

प्रिंस से मेरी पहली मुलाकात विद्यालय में क्रिसमस पर कर रहे कार्य के दौरान हुआ था। जिसमे प्रिंस ने बढ़-चढ़ कर हिस्सा लिया था। दूसरे दिन ही एक आवाज मुझे किसी एक बच्चे की और खींचती चली गई। वह आवाज थी प्रिंस की, जब किसी बच्चे ने उसे कपड़ा गन्दा करते देख बोला कि *"इतना कपड़ा गन्दा किया है आज तेरी माँ तुझे पीटेगी"* इस पर प्रिंस ने पलट कर जबाव दिया कि *"किसकी हिम्मत है जो मुझे पीट सके? माँ पीटेगी मुझे? उनकी सामत आई है क्या?"* मैंने उससे पूछा-*"क्यों माँ आप से गुस्सा नहीं होती है क्या?* तो प्रिंस ने कहा *"गुस्सा होती है पर थोड़ा बहुत। मुझे घर में कोई हाथ भी नहीं लगाता। मारना पीटना तो दूर की बात है।"*

कुछ दिनों बाद मैं उस विद्यालय से नियमित क्लास के लिए जुड़ा। अब मेरी मुलाकात प्रिंस से साप्ताहिक होने लगी। इस दौरान मुझे विद्यालय से भी पता चला कि अगर उन्हें शैतानी में किसी को पुरस्कार देने का अवसर मिले तो इकलौते हकदार प्रिंस महोदय ही होंगे। इसके साथ ही साथ मैं महसूस किया कि प्रिंस खुद को अन्य बच्चों से ज्यदा समझदार और बड़ा मानता है। उसे दूसरों को परेशान करना, कूदना, भागना, क्लास से बाहर जाने के तरह तरह बहाने बनाना ज्यादा पसंद है। भले ही वह शैतानी ज्यादा करता है पर उसमे मुझे समझदारी बहुत नजर आई। वह रोज अपनी शैतानी के कारण अपने शिक्षक से पिटाई खाता था। सारे शिक्षक उसकी शैतानी से परेशान थी।

लेकिन मुझे लगता था कि प्रिंस सब समझ सकता है बल्कि वह अन्य बच्चों से ज्यादा समझ सकता है। मैंने उससे अकेले में बात किया की- *"क्यों सब तुम्हारी पिटाई करते है? तुम लोगों कि बात क्यों नहीं मानते और पिटाई खा जाते हो ?"* इस पर वह बोला- *"पता नहीं सर घर पर किसी कि हिम्मत नहीं होती मुझे कुछ भी कहने की पर स्कूल में जिसको देखो मुझे पीटते रहते है।"* फिर मैंने प्रिंस से दोस्ती कर ली और उसे अपनी आर्ट क्लास का मॉनिटर बना दिया।

अब वह प्रत्येक सप्ताह मेरे विद्यालय जाने से पहले ही क्लास में बच्चों को गोला में बैठाना, मुझे सुनाने के लिए एक कविता तैयार कर आने लगा जिससे मैं उसकी तारीफ पूरे क्लास के सामने कर सकूँ। जब मैं उसकी तारीफ करता तो वह बहुत खुश होता और कोशिश करता कि उसे तारीफ का दोबारा मौका मिले। इस तरह वह धीरे धीरे क्लास में रहने लगा। उसकी रूचि क्लास में बनने लगी। इसके साथ ही साथ विद्यालय कार्य में भी हाथ बँटाने लगा। फिर सबको समझ आ गया कि प्रिंस डांट मार से नहीं मनाने वाला और न ही वह जो कर रहा है उसे नजरंदाज करने से बात मान लेगा। प्रिंस

को समझना है तो हमें उससे प्यार से बात करनी होगी। कुछ ही दिनों में प्रिंस सभी का चहेता बन गया।

छोटा होने तथा साईकिल ठीक से नहीं चला पाने के करण प्रिंस घरौंदा नियमित क्लास से तो नहीं जुड़ पाया पर समय-समय पर घरौंदा क्लास या कार्यशाला में शामिल होकर उसने बहुत कुछ सीखा। आज वह परिवर्तन पुस्तकालय और झरोखा से भी जुड़ा हुआ है और खूब तरक्की कर रहा है। ।

-राजवर्धन घरौंदा संचालक

विज्ञानशाला

परिवर्तन विज्ञानशाला क्षेत्र में वैज्ञानिक सोच विकसित करने और रूढ मान्यताओं को सजीव प्रयोग के माध्यम से समाप्त करने की दिशा में प्रयासरत है।विज्ञान विषय को लेकर परंपरागत भय को भी यह रोचक प्रयोग एवं हैंड्स ऑन एक्सपेरीमेंट्स की मदद से समूल रूप से नष्ट कर बच्चों में विज्ञान के प्रति स्वाभाविक रुचि जागृत करती है। और समय-समय पर विशेषज्ञों को आमंत्रित कर यह गाँव -गाँव के स्कूलों और परिसर स्थित शाला में सेमीनार, और प्रयोग करवाती है।

विज्ञान प्रदर्शनी: 28-29 नवंबर 2022

परिवर्तन विज्ञानशाला एवं श्री कृष्ण विज्ञान केंद्र के सहयोग से विद्यालय एवं परिवर्तन परिसर में विज्ञान प्रदर्शनी का आयोजन किया गया और श्री कृष्ण विज्ञान केंद्र (पटना) से भ्रमणशील विज्ञान प्रदर्शनी बस का सहयोग मिला। भ्रमणशील प्रदर्शनी बस में विज्ञान विषय से अनेक सिद्धांतों एवं बिंदुओं को लेकर प्रयोग/मॉडल प्रदर्शित किया जाता है ,जो सामान्यतः बेहद सरल, प्रभावी एवं व्यावहारिक होता है। प्रदर्शनी में भौतिकी,एवं दैनिक जीवन में उपयोग किये जाने वाले यंत्रों को संकलित किया गया था।

प्रथम सत्र में प्रदर्शनी बस उत्क्रमित उच्च विद्यालय संजलपुर के विद्यालय परिसर में लगाई गई जहाँ मध्य विद्यालय गोंठी के बच्चे भी प्रदर्शनी देखने के लिए बुलाये गए थे तथा दूसरे सत्र में प्रदर्शनी को मध्य विद्यालय बेलही पूरब के परिसर में लगाया गया। यहाँ पर भी बेलही पूरब के अतिरिक्त मध्य विद्यालय बालिया एवं उत्क्रमित उच्च विद्यालय बंगरा उज्जैन के बच्चे शामिल हुए। इस प्रकार विज्ञान प्रदर्शनी के पहले दिन कुल 5 विद्यालयों को प्रदर्शनी का अवलोकन करने के लिए शामिल किया गया, जिसमें लगभग 395 छात्र/छात्राएं एवं 26 शिक्षक सम्मिलित हुए।

इसी प्रकार प्रदर्शनी के दूसरे दिन बस को परिवर्तन परिसर में ही दो सत्रों में लगाया गया और दूसरे दिन चार विद्यालयों से कुल 238 छात्र/छात्राएँ एवं 8 शिक्षक प्रदर्शनी को देखने के लिए परिसर में उपस्थित हुए।इस प्रकार दो दिवसीय विज्ञान प्रदर्शनी के चार सत्रों में 9 विद्यालयों से लगभग **633 छात्र/छात्राएँ** एवं **32 विद्यालय** के शिक्षक प्रदर्शनी से लाभान्वित हुए एवं विज्ञान की उलझनों को उत्साह के साथ समझने का प्रयास किया।

परिवर्तन विज्ञानशाला के सहयोग से दो विद्यालयों में विज्ञान प्रयोगशाला का प्रारंभ

परिवर्तन विज्ञानशाला पिछले पांच वर्षों से अपने कार्यक्षेत्र के 6 मध्य विद्यालयों एवं 9 उच्च विद्यालयों के साथ विज्ञान विषय के पठन पाठन में प्रायोगिक अध्यापन शैली को बढ़ावा देने हेतु अनेक प्रयास कर रही है। जिसमें विद्यालयों में प्रायोगिक कक्षा का सञ्चालन, परिवर्तन विज्ञान केंद्र पर बच्चों के साथ प्रायोगिक क्लास का आयोजन कर उनकी रूचि में विकास, विशेषज्ञों की देख रेख में विज्ञान कार्यशाला का आयोजन, समुदाय एवं विद्यालयों में विज्ञान मेला का आयोजन, समुदाय तथा विद्यालयों में विज्ञान प्रदर्शनी का आयोजन, विज्ञान दिवस पर प्रयोग/मॉडल प्रदर्शनी प्रतियोगिता में बच्चों एवं शिक्षकों का जुड़ाव महत्त्वपूर्ण है। पिछले कुछ वर्षों से निरंतर इन गतिविधियों के संचाल्लन के बाद भी विद्यालयों में प्रायोगिक अध्यापन शैली को जोड़ पाने में कठिनाई हो रही थी जिसका एक प्रमुख कारण- विज्ञान प्रयोगशालाओं में संसाधनों का ना उपलब्ध होना था। अगर कहीं कुछ पहले था भी तो वह इतनी जीर्ण शीर्ण अवस्था में पड़ा था जिसे विद्यालय प्रबंधन देखता तक नहीं था। शिक्षक बैठक में हमेशा यह माँग होती थी- हमारे पास विज्ञान प्रयोगशाला के संसाधनों के नहीं होने के कारण इस विधा को हम विद्यालय में नहीं दिखा पा रहे हैं।

परिवर्तन विज्ञानशाला इस स्थिति में बदलाव लाने को लेकर अपने योजना पर लगातार प्रयास कर रहा था। इसी क्रम में सबसे पहले विद्यालयों के शिक्षकों के साथ-साथ प्रधानाध्यापक के साथ बैठक कर विद्यालयों तक विज्ञान प्रयोग किट और विद्यालय में एक प्रयोगशाला कक्ष बनाने को लेकर सहमति बनी। इस प्रकार शैक्षणिक सत्र 2022-23 में दो बार शिक्षक बैठक का आयोजन कर प्रयोगशाला के कार्य को आगे बढ़ाने के तमाम पहलुओं की रूप रेखा निर्धारित करते हुए इस कार्य को आगे बढ़ाया जा चुका है।

पूर्व के दो सत्रों को मिलाकर विज्ञानशाला ने अपने कार्यक्षेत्र के कुल पाँच विद्यालयों में विज्ञान प्रयोगशाला प्रारंभ कर ली है। शैक्षणिक सत्र 2022-23 में विज्ञानशाला के प्रयास से दो विद्यालयों में विज्ञान प्रयोगशाला स्थापित हो गई है।

मध्य विद्यालय भरौली, शहीद उमाकांत उच्च विद्यालय, उत्क्रमित उच्च विद्यालय संजलपुर, मध्य विद्यालय बड़हुलिया एवं उत्क्रमित उच्च विद्यालय बंगरा उज्जैन में से तीन विद्यालयों में विज्ञान प्रयोगशाला कक्ष प्रायोगिक संसाधनों के साथ शुरू हो चुके हैं। पिछले सत्र में शुरू की गई प्रयोगशालाओं में, मध्य विद्यालय बड़हुलिया तथा उत्क्रमित उच्च विद्यालय बंगरा उज्जैन में प्रयोगशाला स्थापित हो गई है। विज्ञानशाला के लिए आगे इन विद्यालयों में प्रयोगशाला को निरंतर व्यवहार में लाने का प्रयास किया जाएगा। जिन विद्यालयों में विज्ञान प्रयोगशाला की शुरुआत हो पाई है उन विद्यालयों के अपने प्रयास बेहद सराहनीय रहे हैं।

-सुधीर सिंह, संचालक विज्ञानशाला

इससे पूर्व भी 2018 नवम्बर माह में और 2020 अप्रैल माह में यह प्रदर्शनी परिवर्तन परिसरके साथ -साथ विद्यालय एवं समुदाय में सफलतापूर्वक लगाई जा चुकी है। लेकिन इस बार छात्रों की बढ़ी हुई संख्या बेहद सुखद रही।

गणितशाला

शिक्षा की यह उप इकाई क्षेत्र में गणित के प्रति बसे पूर्वाग्रह को समाप्त कर बच्चों में गणित के प्रति जिज्ञासा एवं दिलचस्पी कायम करने का प्रयास करती है।ग्रामीण बच्चों के मन में गणित को लेकर संशय रहता है, उसे ही रोचक प्रयोगों एवं गतिविधियों के माध्यम से यह बदलने का प्रयास करती है।

जोड़ो ज्ञान कार्यशाला 29 से 31 जुलाई-

गणित को बोझ समझने एवं इससे डरने वाले बच्चों के लिए गणित को आसान बनाया जा सके साथ ही साथ अलग-अलग रुचिकर गतिविधि के माध्यम से उनके अन्दर गणित की समझ को बढ़ाये जा सके इस उद्देश्य से जोड़ो ज्ञान कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला को दो सत्रों में आयोजित किया गया। प्रथम सत्र में प्राथमिक विद्यालय के बच्चे तथा द्वितीय सत्र में मध्य विद्यालय के बच्चों की सहभागिता रही।

इस कार्यक्रम में विशेषज्ञ के रूप में पटना डी. पी. एस. से दो शिक्षक-अमृता चौधरी (डी.पी.एस. पटना) एवं स्वेता शुक्ला (डी.पी.एस पटना) आए। इस दौरान प्रथम सत्र में कार्यक्षेत्र के 8 प्राथमिक विद्यालयों से 60 बच्चों की सहभागिता रही तथा दूसरे सत्र में 8 मध्य विद्यालयों से 55 बच्चों की सहभागिता रही।

गणित माला से गिनती तथा फ्रैकशन किट की मदद से भिन्न के जोड़ और घटाव सीखना बच्चों को दिलचस्प लगा।। साथ ही साथ बच्चों को केक वाले कहानी की मदद से फ्रैकशन को समझाया गया।

एक हज़ार के गणित माला पर गिनती का अभ्यास तथा अंक को को शब्द में लिखने का अभ्यास कराया गया। गणित माला पर पीले कार्ड पर चिन्हित अंक मान को बैठाना सिखाया गया। इसके बाद सलाई मिठाई- सालई मिठाई से जोड़ घटाव और गिनती का अभ्यास कराया गया।

डाइस ब्लाक की मदद से दशमलव की समझ को विकसित किया गया। दशमलव का जोड़ घटाव बच्चों को सबसे ज्यादा उबाऊ लगता है जिससे बच्चे प्रायः भागते रहते है। इस परिस्थिति में दशमलव के जोड़ घटाव को बच्चों के बीच रुचिकर बनाने हेतु यह गतिविधि करवाई गई जिसमे बच्चे खेल खेल से दशमलव का जोड़ घटाव सीख लें।

कार्यक्रम अत्यंत सफल रहा और बच्चों ने ऐसे सत्रों की और माँग की।

गणित कार्यशाला: 21 तथा 22 अक्टूबर 22

गणित विषय के प्रति लगाव एंव साथ ही साथ अलग-अलग गतिविधियों के माध्यम से बच्चों के अंदर गणित की समझ को बढ़ाने के उद्देश्य से दो दिवसीय गणित कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में विशेषज्ञ के रूप में परिवर्तन से दो प्रशिक्षकों- प्रिंस कुमार सिंह तथा ब्रजेश कुमार सिंहने अपनी सहभागिता सुनिश्चित की।

इस कार्यशाला में प्राथमिक स्कूल के बच्चों ने भाग लिया था। इस दौरान कार्यक्षेत्र के 8 प्राथमिक विद्यालय से 56 बच्चों ने भाग लिया।

इरादे मजबूत हों तो कुछ भी मुश्किल नहीं लगता

शिवम एक सीधा साधा लड़का है वह परिवर्तन कार्यक्षेत्र के तिवारी भटकन समुदाय का रहने वाला है। शिवम कक्षा 7 का छात्र है। शिवम अपने माँ बाप का एकलौता पुत्र है। बहुत ही शांत रहने वाला शिवम, गणितशाला में इस तरह का बर्ताव करता है जैसे क्लास में कोई है ही नहीं। किसी भी दूसरे बच्चे से सिर्फ ज़रूरत के हिसाब से ही बात करता है। गाँव में बुजुर्ग कहा करते हैं कि जिसका एक बेटा होता है वो या तो बिगड़ जाता है या बन जाता है। शिवम पर बनने वाली बात लागू होती है। शिवम के पिता से बात करने पर पता चला कि वे एक किसान हैं, जो अपने परिवार का भरण पोषण खेती के माध्यम से ही करते हैं।। आगे उसके पापा बताते हैं –"*शिवम अपनी माँ से अक्सर कहता रहता है कि माँ मैं बड़ा होकर आर्मी में जाऊंगा और देश की सेवा करूँगा। पापा मुझे पढ़ाने के लिए इतनी मेहनत करते हैं मैं उनके विश्वास को टूटने नहीं दूंगा। पापा के लिए एक ट्रेक्टर भी खरीदूँगा।*" शिवम के पापा आगे कहते हैं कि उनका बेटा खेती में भी उनके हाथ बँटाता है।

शिवम गणित में बहुत रूचि रखता है। कोई भी सवाल हो या कैसी भी समस्या हो वो घबराता नहीं है, डट कर मुकाबला करता है। मैंने एक दिन उससे पूछा-"*तुम्हे गणित विषय इतना पसंद क्यूँ है?*" उसने कहा "*मुझे बड़ा होकर आर्मी में जाना है, बिना गणित के आर्मी में सिलेक्शन नहीं होता*"। मैंने कहा- "तुम्हे ऐसा किसने कहा?" फिर उसने बताया कि गाँव कुछ

भैया बात कर रहे थे कि बिना गणित के कुछ भी नहीं हो सकता इसीलिए वो अपनी लगन का पक्का है और गणित उसका प्रिय विषय है।

शिवम के इन मज़बूत इरादों के बारे में सुनना बहुत अच्छा लगता है।

-प्रिन्स सिंह संचालक, गणितशाला

सामुदायिक खेल

उमंग

उमंग इकाई क्षेत्र के बच्चों के बीच सामुदायिक खेलों के माध्यम से सामाजिक कुरीतियों और रूढ मान्यताओं को दूर कर सामाजिक बदलाव लाने का प्रयास करती है। खेल के माध्यम से विकास, सामुदायिक भाईचारा और नए सौहार्दपूर्ण संबंधों की रचना होती है। अतः स्वस्थ मनोरंजन के साथ - साथ बच्चों के संग-संग उनके अभिभावकों एवं समुदाय के अन्य लोगों को भी आगामी जीवन में आने वालों अवरोधों से लड़ने की ताकत मिलती है और वे अपने सुंदर भविष्य का निर्माण करते हैं।

फुटबॉल टूर्नामेंट: 27 - 30 दिसम्बर 2022

सामुदायिक खेल- उमंग ने फुटबॉल को समुदाय में बढ़ावा देने और क्षेत्र में संभावनाशील खिलाड़ियों को तलाश, उन्हें कौशल प्रशिक्षण दे कर राज्य एवं राष्ट्र स्तर पर उनकी पहचान बनाने के उद्देश्य से नियमित रूप से फुटबॉल टूर्नामेंट आयोजित करना प्रारंभ किया है।

उसी क्रम में इस वर्ष भी परिवर्तन फुटबॉल टूर्नामेंट का आयोजन किया गया। इस टूर्नामेंट में कुल 8 टीमों ने भाग लिया जिसमें परिवर्तन की एक टीम भी शामिल थी।

टूर्नामेंट का आयोजन करने हेतु बहुत तरह की तैयारियां की गई जिसमे-निरंतर अभ्यास,वेन्यू की स्वच्छता और खिलाड़ियों की शारीरिक सुरक्षा प्रमुख थे। अलग-अलग टीमों के मैनेजरों से बातचीत कर सभी की सहमति से अभ्यास के लिए दिन निर्धारित किए गए। खेल बेहतर ढंग से संचालित हो इसके लिए अलग से लाइनमैन और रेफरी की व्यवस्था भी हुई। मैच में दी जाने वाले ट्राफी और पुरस्कार राशि की घोषणा पहले से ही सार्वजनिक कर दी गई थी।

मैच में भागीदारी करने वाली टीमें;

क्र.सं.	टीम का नाम
1	परिवर्तन बॉयज फुटबॉल क्लब, नरेन्द्रपुर
2	अम्बेडकर स्पोर्ट्स फुटबॉल क्लब, भटवा पाण्डेय
3	भीम राव अम्बेडकर फुटबॉल क्लब, बेलौरी
4	ऐ.एफ.सी.फुटबॉल क्लब, गहिलापुर
5	संघर्ष युवा फुटबॉल क्लब, मिलखी
6	अंसार स्पोर्टिंग फुटबॉल क्लब, जमालहाता
7	कंधवारा फुटबॉल क्लब, सिवान
8	टाउन फुटबॉल क्लब, पचरुखी (सिवान)

फाइनल मैच: परिवर्तन बॉयज फुटबॉल क्लब नरेन्द्रपुर V/S कंधवारा फुटबॉल क्लब सिवान के बीच खेला गया। परिवर्तन टीम ने पेनाल्टी शूट आउट में 8-7 से मैच जीतकर ट्राफी और नगद राशि अपने नाम की।

इसी जीत के साथ समुदाय में यह संदेश भी गया कि परिवर्तन से जुड़े खिलाड़ी फुटबॉल अच्छा खेलते हैं।

कबड्डी महामुकाबला: 4-6 नवम्बर 2022

परिवर्तन ने कबड्डी महामुकाबला की शुरुआत लड़कियों को खेलों के प्रति आकर्षित कर उनकी शारीरिक फिटनेस और मानसिक बल को विकसित कर सशक्तिकरण का संदेश देने के लिए की।इसके साथ ही समुदाय में वर्षों से चली आ रही रूढ़िगत मान्यताओं को सजीव उदाहरणों से चुनौती दे समुदाय की सोच को बदलना भी परिवर्तन का लक्ष्य था-*लड़कियाँ मौका मिलने पर शारीरिक और मानसिक रूप से हर क्षेत्र में लड़कों के बराबर ठहरती हैं और खेलों में भी अपना कैरीयर बना सकती हैं।* इस वर्ष महामुकाबला के आयोजन में लड़कियों की 8 टीमों ने भाग लिया। यह टीमें परिवर्तन के कार्य क्षेत्र के अंतर्गत आने वाले 8 पंचायतों से थीं।

महामुकाबला अलग-अलग गाँवों, स्कूलों और उड़ान खेल मैदान में आयोजित किया गया। उमंग के संचालकों ने आठों पंचायतों के खिलाड़ियों का ट्रायल लिया और सभी टीमों में 16 -16 खिलाड़ियों को को रखा गया। चयनित खिलाड़ियों को परिवर्तन से जुड़े सीनियर कबड्डी खिलाड़ियों द्वारा प्रशिक्षित किया गया। प्रशिक्षण पश्चात सभी टीमों में से 12-12 खिलाड़ियों का चयन किया गया और टीमों का रोचक नामकरण- नरेन्द्रपुर ज्वाला, जामापुर तूफान,चंदौली-गंगौली गड़ार गंगा, मियाँ भटकन मर्दानी, भरौली आँधी, बलिया वीरांगना, भवराजपुर चिंगारी हुआ। सभी टीमों के नामनुसार जर्सी तैयार की गई।

मैच टाई के अनुसार हुआ जिसमें सभी टीमों को 3-3 मैच खेलना था। जिन टीमों ने ज्यादा मैच जीते वे सेमीफाइनल और फाइनल खेलीं। फाइनल मैच जामापुर तूफान बनाम भवराजपुर के बीच खेला गया। भवराजपुर चिंगारी टीम ने फाइनल मैच जीत ट्राफी अपने नाम की। मैच ऑफ़िशियल द्वारा बेस्ट रेडर का पुरस्कार संजु कुमारी को मिला। बेस्ट डिफेंडर के लिए पुष्पा कुमारी का नाम घोषित किया गया। बेस्ट ऑल राउंडर खिलाड़ी आस्पी खातून रहीं।

इस मैच को लगभग 1100 लोगों ने देखा और प्रशंसा की। प्रमुख अतिथि गण- सिवान जिला कबड्डी सचिव- मनोरंजन सिंह, पंचायत प्रतिनिधि, समाज सेवी और अनेक शिक्षकगणों ने उपस्थित होकर खिलाड़ियों का हौसला बढ़ाया।

इस वर्ष खेल इकाई की उपलब्धि 17 वें राष्ट्रीय कबड्डी प्रतियोगिता में शामिल खिलाड़ी रजनी राय का सिल्वर मेडल हासिल करना था। इस खेल के प्रति लड़कियों का रुझान बढ़ रहा है और ऐसी उपलब्धियां प्रेरणास्त्रोत की तरह काम करती हैं।

साइकिल रेस;

20, 21 जनवरी 2023

परिवर्तन की सालाना साइकिल रेस प्रत्येक वर्ष की तरह इस बार भी बहुत सफल और चर्चित रही।

सब जूनियर 10-12 वर्ष बालक वर्ग: इस समूह के विजेताओं के नाम इस प्रकार है:

क्र. सं.	प्रतिभागी का नाम	पिता का नाम	गाँव का नाम	समय	स्थान प्राप्त किया
1.	आकाश कुमार यादव	हरेराम यादव	पठारदेई	18:37:41	पथम स्थान
2.	रोहित कुमार मांझी	प्रमचंद मांझी	खेम भटकन	18:41:73	दूसरा
3.	त्रिभुवन कुमार यादव	संतोष यादव	खर्गीरामपुर	18:56:82	तीसरा

सब जूनियर बालिका समूह:

स्थान प्राप्त किया	प्रतिभागी का नाम	पिता का नाम	गाँव का नाम	समय	दूरी
पथम स्थान	अंकिता कुमारी	अनिल यादव	खेम भटकन	22:36:91	10 किलोमीटर
दूसरा	गुड़िया कुमारी	हरेराम गोंड	रुईयाँ	23:37:37	10 किलोमीटर
तीसरा	लक्ष्मी कुमारी	जितेन्द्र राम	बड़हुलिया	24:04:68	

जूनियर 13-15 वर्ष बालक वर्ग:

स्थान प्राप्त किया	प्रतिभागी का नाम	पिता का नाम	गाँव का नाम	समय	दूरी
पथम स्थान	बादल कुमार यादव	वृजकिशोर यादव	बेलही	17:04:25	10
दूसरा	आशीष कुमार	संजय यादव	खर्गीरामपुर	18:28:10	10
तीसरा	आदित्य कुमार	चन्द्रभूषण सिंह	बेलही	18:45:06	10

जूनियर बालिका वर्ग:

स्थान प्राप्त	प्रतिभागी का नाम	पिता का नाम	गाँव का नाम	समय	दूरी
पथम	शिल्पी कुमारी	सुरेन्द्र गोंड	रुईयाँ	20:48:89	10 कि.मी.
दूसरा	मनीषा कुमारी	भूखल राम	बड़हुलिया	21:32:64	10 कि.मी.
तीसरा	अराध्य कुमारी	मोहन यादव	चाँदपाली	22:04:68	10 कि.मी.

सीनियर 16-18 वर्ष बालक वर्ग:

स्थान प्राप्त किया	प्रतिभागी का नाम	पिता का नाम	गाँव का नाम	समय	दूरी
पथम स्थान	आर्यन कुमार	कृष्णा यादव	खर्गीरामपुर	16:00:22	10
दूसरा	शिवपुकर	दुखन्ति प्रसाद	बलईपुर	17:02:57	10
तीसरा	बिजली कुमार यादव	वृजकिशोर यादव	बेलही	17:32:95	10

सीनियर बालिका वर्ग:

स्थान प्राप्त	प्रतिभागी का नाम	पिता का नाम	गाँव का नाम	समय	दूरी
पथम	काजल कुमारी	हरेराम यादव	पठारदेई	20:18:12	10 कि.मी.
दूसरा	संजु कुमारी	भगवान यादव	भवराजपुर	21:58:83	
तीसरा	वंदना कुमारी	शाहब	बड़हुलिया	22:15:27	

विजेता प्रतिभागियों को साइकिल, मेडल और प्रमाण पत्र देकर समानित किया गया। **इस** रेस को लगभग 1100 लोगों ने देखा। यह आंकड़ा क्षेत्र में इस रेस की लोकप्रियता को दर्शाता है।

सामुदायिक खेल प्रतियोगिता: 9 फरवरी-12 फरवरी

सामुदायिक खेल- उमंग द्वारा S4D सत्र से जुड़े बच्चों की अनूठी खेल प्रतियोगिता का आयोजन समुदाय के लोगों के द्वारा किया गया। इस प्रतियोगिता में आठ टीमों- नरेन्द्रपुर, बड़हुलिया, बड़हुलिया हाता, गोंठी, बाबु भटकन, खेम भटकन, सिकिया और धर्मपुर से 160 खिलाड़ियों ने दो मज़ेदार खेलों में भाग लिया। पहला खेल था -बोतल भरना और दूसरा था- चार गोल करना। समुदाय समग्र रूप से खेलों से जुड़े, सोच बदले, साझा मूल्य निर्मित करे और लिंग, जाति एवं धर्म की बंदिशें टूटें इसी उद्देश्य से यह सामूहिक प्रतियोगिता करवाई जाती है।

इस प्रतियोगिता को कराने में उमंग ने तकनीकी सहयोग प्रदान किया। सी वाई एल,

(CYL) और वाई एम (YM) की ज़िम्मेवारी टीम की उपस्थिति को सही समय और सही जगह पर सुनिश्चित करना और खेल उपरांत प्रतिभागियों को घर तक पहुँचाने की थी। बच्चों के लिए ट्राफी, मेडल और बिस्कुट की व्यवस्था समुदाय के लोगों ने की।

प्रतियोगिता का उद्घाटन बाबू भटकन गाँव में हुआ जहाँ पहला मैच बड़हुलिया V/S बड़हुलिया हाता के बीच हुआ। उद्घाटन समारोह में वार्ड सदस्य नरेश चौधरी और बच्चों के अभिभावक उपस्थित थे। बड़हुलिया हाता टीम विजेता हुई और सेमीफाइनल में पहुँची।

मैच का समापन 12 फरवरी को फाइनल मैच से हुआ जिसमें नरेन्द्रपुर बनाम गोंठी के बीच खेला गया। गोंठी टीम विजेता हुई जिसे नरेन्द्रपुर के मुखिया ने ट्रॉफी दी। उप विजेता टीम को भी ट्राफी और मेडल देकर सम्मानित किया गया।

मन के हारे हार है; मन के जीते जीत

रजनी राय, पिता परमेश्वर राय, माता बुच्ची देवी की प्रथम पुत्री हैं। गाँव शंकरपुर, प्रखंड जीरादेई, जिला सिवान (बिहार) की ये निवासी हैं। इनकी उम्र 19 वर्ष है। इनके दो छोटे भाई भी हैं। भाई-बहनों में ये सबसे बड़ी है। पिता जी गुजरात में एक प्राइवेट कम्पनी में काम करते हैं जिससे घर का खर्चा चलता है। माँ घर पर रहती हैं और बच्चों की देखभाल करती हैं। रजनी की प्रारम्भिक शिक्षा एक प्राइवेट स्कूल से शुरू हुई जो गाँव के बगल में ही था। आगे की पढ़ाई के लिए महेंद्र हाई स्कूल जीरादेई में इनका नामांकन हुआ जहाँ से इन्होंने मैट्रिक और इंटर की परीक्षा सेकेण्ड डिविजन से पास की। अभी भी इनकी पढ़ाई जारी है और ये B.A पार्ट 1 में पढ़ रही हैं।

बचपन से इनकी खेल में रूचि थी। फुटबॉल और कबड्डी खेलना बहुत पसंद था। महेंद्र हाई स्कूल में इन्होंने कबड्डी का प्रशिक्षण- अनीरुद्ध पटेल के साथ शुरू किया। एक बार स्कूल की ओर से पूर्णिया जाकर खेलने का मौका भी मिला।यह पहला मैच था और वह यह मैच हार गईं। लेकिन उनकी यही हार अब जीतने के जुनून में बदल गई। जब कभी समय मिलता तो वे मोबाइल पर ही कबड्डी का स्किल और मैच देखने में बिताती। आगे बढ़ने की सोच को लेकर उन्होंने सुरवल गाँव में कबड्डी का अभ्यास करना अपने डेली रूटीन में शामिल कर लिया।

वर्ष 2020 में कबड्डी सीखने के लिये परिवर्तन सामुदायिक खेल से रजनी का जुड़ाव हुआ। परिवर्तन के उड़ान खेल मैदान में, कबड्डी कोच- अभिमन्यु सिंह द्वारा खिलाड़ियों का नियमित अभ्यास कराया जाता है। परिवर्तन से रजनी के गाँव की दूरी 8 किलोमीटर है लेकिन वे अपने गाँव से स्कूटी ड्राइव करते हुए नियमित अभ्यास करने आज भी आती हैं। जब से परिवर्तन से जुड़ी हैं तब से आज तक 6 जिलास्तरीय और 6 राज्यस्तरीय मैच खेल चुकीं हैं। इसके अलावा स्थानीय और बाहरी मैचों में बहुत बार मैच खेल चुकी हैं।

वर्ष 2022 में पटना में आयोजित जूनियर राष्ट्रीय मैच में रजनी को खेलने का मौका मिला और इन्होंने सिल्वर मेडल हासिल किया। गाँव के लोग जो पहले रजनी पर खेल में समय और पैसा बर्बाद करने वाला व्यंग कसते थे उनके मेडल हासिल करने के बाद उनके भव्य स्वागत में लग गए। रजनी के अभिभावक तो उनका हौसला हमेशा ही बढ़ाते रहे हैं उनका सर भी ऊँचा हुआ।

रजनी परिवर्तन के प्रति अपना आभार व्यक्त करते हुए कहती हैं-*"अभी तो बिहार टीम के लिए खेली हूँ लेकिन मेरा सपना है कि मैं अपने भारत देश के लिए खेलूं और मेडल लाऊँ।"*

-मिथिलेश कुमार, प्रबंधक उमंग

सामुदायिक रंगमंच रंगमंडली

सामुदायिक रंगमंच की इकाई- रंगमंडली, क्षेत्र में नाटक, गीत संगीत एवं नुक्कड़ प्रदर्शनों द्वारा सामाजिक चेतना में वृद्धि, राजनैतिक एवं सामाजिक समीक्षा तथा स्वस्थ मनोरंजन का पर्याय बन बहुत यश अर्जित कर रही है।प्रदर्शनों के अतिरिक्त रंगमंडली, क्षेत्र के संभावित कलाकारों को प्रशिक्षित कर प्रादेशिक एवं राष्ट्रीय मंचों के लिए तैयार कर रही है ताकि रंगमंच के ये हुनरमंद कलाकार अपने सुंदर भविष्य का निर्माण कर सकें। इसके साथ ही वह ग्रामीण क्षेत्र से विलुप्त हो रहे परंपरागत लोक गीत, संगीत एवं नाट्य शैलियों को पुनर्जीवित कर संरक्षित करने का महती प्रयास भी कर रही है।

स्कूल स्तरीय नाट्य कार्यशाला

वर्ष 2022 -23 में रंगमंडली ने 3 स्थानीय विद्यालयों में नाट्य कार्यशाला का आयोजन किया। रंगमंडली लगातार स्कूलों में कार्य करती रही है और इस अनुभव के आधार पर स्कूलों और स्कूल की शिक्षा व्यवस्था और इसके वातावरण को भी महसूस करती है और इसी आधार पर कार्यशाला की योजना बनाती है। यह पाया गया है कि स्कूली बच्चों में सस्वर पाठ करने क्षमता की कमी और झिझक ने बच्चों की खुलकर बोलने और सवाल पूछने की क्षमता को कमज़ोर किया है। इसके साथ ही स्कूलों में अतिरिक्त गतिविधियाँ और रचनात्मकता भरे कार्य बहुत कम होते हैं। अतः रंगमंडली द्वारा आयोजित नाट्य कार्यशाला का मकसद सिर्फ नाट्य प्रदर्शन या बच्चों का मनोरंजन नहीं है, बल्कि इस माध्यम से बच्चों की सस्वर पाठ करने क्षमता को बढ़ाना उनकी झिझक को तोड़ना, उनके अन्दर आत्मविश्वास जगाना और उनकी कल्पना शक्ति को उड़ान देना है। नाटक को हम स्थानीय भाषा में खेला भी कहते हैं। या हम कहते है -हम नाटक खेलते है, बस इसी सिद्धांत से खेल-खेल में बच्चों की रीडिंग को बेहतर बनाने का काम हम अपनी कार्यशालाओं में करते हैं।

नाटक में शब्द होते हैं और उन शब्दों को कैसे बोला जाए उसका हुनर बच्चे सीखते हैं। साथ ही दृश्य निर्माण में वे अपनी कल्पना शक्ति का प्रयोग करते हैं और कई चरित्रों को एक समूह में करने और देखने का प्रयास करते हैं इससे उनका बौद्धिक विकास तो होता ही है साथ में वे समूह में अनुशासित तरीके से कैसे कार्य किया जाए इसका अनुभव भी प्राप्त करते हैं। नाटक की यह खूबी है कि वह बहुत छोटी उम्र से बच्चों के जीवन का हिस्सा होता है। बच्चे बचपन से ही विभिन्न पशु पक्षियों की आवाज़ों की नकल उतारने में माहिर होते हैं। इसीलिए वे नाटक से जुड़ना नैसर्गिक भाव से कर सकते हैं।

इस नाट्य कार्यशाला का उद्देश्य बच्चों को दूसरे बच्चों की बातों को सहजता से समझना और उसे सकारात्मक ढंग से जीवन में लागू कर सामाजिक बराबरी के मर्म को समझना था। दरअसल जीवन जीना और दूसरों के दृष्टिकोण को समझना, रंगमंच बखूबी सिखाता है।

कार्यशाला

क्र.सं	दिनांक	विद्यालय	लड़के	लड़की	कुल
01	02 से 19 नवम्बर 2023	मध्य विद्यालय, बड़हुलिया	10	20	30
02		मध्य विद्यालय, भरौली	12	09	21
03		उच्च विद्यालय, उज्जैन बंगरा	10	25	35

नुक्कड़

नुक्कड़ नाट्य प्रदर्शन न सिर्फ मनोरंजन का साधन है बल्कि किसी ख़ास सामुदायिक समस्या पर चर्चा करने और उस समस्या पर तर्कसंगत व्याख्या करने का भी एक सशक्त माध्यम है। हम यह मानते हैं कि वर्तमान समय में सूचनाओं का प्रसार बढ़ा है, टेलीविजन और मोबाइल ने सहज ही सूचनाएँ घर-घर तक पहुंचाई हैं, उसके मुकाबिले नुक्कड़ एक जीवंत विधा है जो दर्शकों के बीच लाइव होता है। नुक्कड़ का काम बहुआयामी है। वह न सिर्फ सूचनाएँ देता है बल्कि सूचनाओं पर आम जन को तर्क करने और चर्चा करने को उत्प्रेरित करता है। नाटक में जो कुछ भी प्रस्तुत किया जाता है वो स्थानीय समस्या और उसके निदान पर आधारित होता है इसीलिए नुक्कड़ नाट्य प्रदर्शन आम जन को जागरूक करने और उस समस्या के प्रति सचेत करने का रोचक माध्यम है। इससे आम जन का जुड़ाव भी बढ़ता है और आम जन अपनी खूबियों और खामियों को इस माध्यम से देख पाता है। वह उस माध्यम से सवाल भी करता है और जब नुक्कड़ पर आम ग्रामीणों के समक्ष सवाल आते हैं तो उसका निदान भी आम जन ही देता है।हालाँकि यह भी सच है कि बदलाव इतना सहज नहीं है फिर भी लगातार नुक्कड़ प्रदर्शन से बदलाव के रास्ते नज़र आते हैं।

उदाहरण के तौर पर अगर नुक्कड़ प्रदर्शन के प्रभाव की बात करें तो हम यह कह सकते हैं कि फरवरी माह में रंगमंडली ने साफ़-सफाई और

स्वच्छता विषय पर नाटक-*खुली आँख का सपना*, को गढ़ा। फिर स्कूली बच्चों, शिक्षकों तथा समुदाय को एक जगह इकठ्ठा कर इसका प्रदर्शन किया। इस नाटक में स्कूल की पढ़ाई से लेकर उसकी साफ़-सफाई पर चर्चा थी। स्कूलों में ग्रामीणों द्वारा गन्दगी फैलाना और ग्रामीणों का स्कूल के प्रति सजग ना होना भी था। ग्राम-बलिया में इस नाटक के उपरांत प्रतिक्रिया के दौरान ग्रामीणों, शिक्षकों और बच्चों ने एक सार्थक चर्चा की। एक ऐसे स्वस्थ वातावरण का निर्माण हुआ जिसमें सभी अपनी-अपनी गलती मानने लगे और यह भी बोल बैठे- *"स्कूल में गाँव के ही 3 टीचर कार्यरत हैं इसलिए इस स्कूल की ये हालत है।"* अंत में सभी स्कूल की बेहतरी के लिए चिंतित हुए और आगे से स्कूल पर ध्यान देने की बात कही। यह प्रेरणादायी माहौल इस प्रदर्शन से ही संभव हुआ। ऐसा कोई दूसरा माध्यम नजर नहीं आता जो सभी को एक जगह इकठ्ठा कर इस विषय पर इतनी सघन चर्चा कर सके। जब समुदाय के लोग, शिक्षक सार्वजनिक रूप से अपनी गलतियों को मानने लगें तो समझना चाहिए कि बदलाव की आहट सुनाई पड़ रही है।

वर्ष 2022-23 में कुल नुक्कड़ नाटकों की प्रस्तुति

क्र.सं.	दिनांक	नुक्कड़ नाटकों के नाम	गाँव / स्कूल	दर्शक
01	27.09.22	नंगा राजा	भवराजपुर	300
02	28.09.22		संथू	200
03	29.09.22	अंधेर नगरी	उज्जैन बंगरा	200
04	25.11.22	सदाचार का ताबीज़	मध्य विद्यालय, रुइयाँ बंगरा	120
05	26.11.22		मध्य विद्यालय, बन्धू श्रीराम	228
06	30.11.22		मध्य विद्यालय, बडहुलिया	257
07	21.02.23	खुली आँख का सपना	मध्य विद्यालय, गोंठी और समुदाय	200
08	22.02.23		मध्य विद्यालय, बालियां और समुदाय	250
09	23.02.23		मध्य विद्यालय, संजलपुर और समुदाय	275
10	24.02.23		मध्य विद्यालय, नरेन्द्रपुर और समुदाय	230
11	25.02.23		मध्य विद्यालय, भरौली और समुदाय	200
12	13.10.23	नंगा राजा	आर.आई.पी, परिवर्तन सभागार	200
13	12.08.22	स्वामी विवेकानंद	यूथ डे, परिवर्तन सभागार	150
14	03.12.22	राजेन्द्र बाबू	डॉ राजेंद्र जयंती, परिवर्तन सभागार	100
15	26.02.23	खुली आँख का सपना	टाउन हॉल, सिवान	400
			कुल दर्शक - 3,310	

मैं हार नहीं मानूँगी और निरंतर आगे बढ़ती जाऊँगी

दिव्या 2017 से बाल रंगमंडली की कलाकार हैं और आज दिव्या सामुदायिक रंगमंच के साथ अपनी अभिनय क्षमता को निखार रही है। ये गाँव नरेन्द्रपुर से आती हैं और इनके पिता श्री शंकर पटेल बंगलोर में एक प्राइवेट कम्पनी में मकेनिक के पद पर कार्यरत हैं। दिव्या स्कूल स्तर से ही सांस्कृतिक कार्यक्रम में रूचि लेती थीं और हमेशा किसी ऐसे अवसर के तलाश में रहती थीं जिसमें वे अपने अन्दर के कलाकार को और निखार सकें और अपनी कल्पनाओं को उड़ान दे सकें। वे बताती हैं-*"जैसे ही मुझे परिवर्तन बाल रंगमंडली के बारे में पता चला तो मैं सीधे आशुतोष सर से मिली और इस मंडली से जुड़ने की इच्छा ज़ाहिर किया और जुड़ भी गई।"*

दिव्या शुरू से ही मेहनती एवं प्रतिभावान छात्रा रही हैं। इन्हें भविष्य में एक प्रसिद्ध गायिका बनना है जिसके लिए ये लगातार प्रयासरत हैं और निरंतर अभ्यास में जुटी रहती हैं और तो और काबिलेतारीफ बात यह है कि दिव्या एक उम्दा अभिनेत्री भी हैं जो इन्हें खुद पता नहीं है। यह तो जब वे मंच पर पहुँच पात्रों को बखूबी जीवंत कर देती हैं तो दर्शक इनके अभिनय के कायल हो जाते हैं।

बाल रंगमंडली से जब दिव्या जुड़ीं तो इनका रुझान गीत-संगीत की तरफ काफी ज्यादा था लेकिन फिर धीरे- धीरे ये अभिनय के गुणों को भी सीखती रहीं और अब वे अपने सीखे कौशल से समुदाय के अन्य बच्चों को परिवर्तन से जुड़ने के लिए प्रेरित करती हैं। समुदाय के उन बच्चों से भी संपर्क करती हैं जिनका रुझान किसी न किसी माध्यम से कला के प्रति है परन्तु वे अपने पारिवारिक दबाव या सामाजिक अवहेलना के कारण उस विधा से जुड़ नहीं पाते हैं। दिव्या वैसे बच्चों के परिवार के लोगों से मिलती हैं और उन्हें अपने कार्यों से परिचित करवाती हैं, जिसके परिणाम स्वरुप आज कई ऐसे बाल कलाकार बाल रंगमंडली से जुड़ नाटक,गीत संगीत के कार्यक्रमों में भाग ले रहे हैं और कलात्मक संतुष्टि और प्रशंसा बटोर रहे हैं।

यह गौरतलब है कि दिव्या के लिए यह रंगमंचीय यात्रा आसान नहीं थी और आगे भी नहीं होने वाली है लेकिन कला के प्रति उनकी लगन और समर्पण के कारण आज दिव्या समुदाय में एक नेतृत्वकर्ता के रूप में अपनी पहचान बनाने में कामयाब हैं। फिर भी समुदाय के लोग अपनी रूढ़िगत सोच से बाज नहीं आते हैं और बोलते हैं-*"तुम इतनी छोटी उम्र से किसी की पत्नी बनती हो तो किसी की बेटी और बेटा।*

*ये लड़कियों के लिए ठीक नहीं है, तुम और कुछ भी कर सकती हो ये नाच-नौटंकी में तुम कुछ नहीं कर पाओगे.......।"*लेकिन दिव्या इन बातों से परेशान नहीं होती हैं और सभी कठिनाईयों और आलोचनाओं को सहज भाव से लेते हुए अपने लक्ष्य हासिल करने का स्वप्न देखती रहती हैं।इनको इस तरह सहज करने में इनके परिवार का भी काफी महत्वपूर्ण योगदान है ख़ासतौर पर इनके पिता का क्योंकि वे भी अब यह सपना देखते हैं कि उनकी बेटी एक दिन एक बेहतरीन गायिका बने और अपने क्षेत्र का नाम रोशन करे। दिव्या की कला के इस उठान और आत्मविश्वास से भरे व्यक्तित्व के लिए वे अनेक बार परिवर्तन रंगमंडली को धन्यवाद देते हैं।

आशुतोष मिश्रा, प्रबंधक, रंगमंडली

महिला सशक्तिकरण ♀ जागृति महिला समाख्या

समुदाय की महिलाओं के भीतर आत्मविश्वास जगाने एवं नागरिक अधिकारों के प्रति उन्हें सचेत करने के उद्देश्य से परिवर्तन ने इस इकाई की स्थापना की है।महिलाओं का संसाधनों पर बराबर का अधिकार हो, निर्णय लेने तथा नेतृत्व करने की क्षमता विकसित हो इसी भाव को लेकर कार्यक्षेत्र की 21 पंचायतों में महिला समाख्या की सदस्य, रूढ़ मान्यताओं को तज, क्षेत्र की किशोरियों एवं महिलाओं को ले जागरूकता की अलख जगाती चलती हैं और शिक्षा, घरेलू हिंसा, पोषण, स्वच्छता, स्वास्थ्य,पेंशन योजनाओं,वार्ड एवं पंचायत में आवाज़ उठाने जैसे मुद्दों पर संजीदगी से काम करती हैं।

विश्व पर्यावरण दिवस :

05 जून 2022

समुदाय की महिलाओं, पुरुषों, किशोरों और किशोरियों के साथ मिलकर, उत्साह से पर्यावरण दिवस का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम के माध्यम से हरियाली की ज़रूरत एवं उसकी सुरक्षा के बारे में समुदाय को चैतन्य किया गया। सभी लोग पर्यावरण पर मंडराते खतरों को समझें और मनुष्य के जीवन से उसके तार किस प्रकार जुड़े हुए हैं उस सच्चाई को ग्रहण करें जिससे प्रकृति - हवा, मिट्टी, पानी, पेड़ पौधे, पशु - पक्षी सब स्वाभाविक रूप से संरक्षित रहें।

इस वर्ष कार्यक्षेत्र के अंतर्गत आने वाली 07 पंचायतों की 350 महिलाओं, पुरुषों, किशोरों एवं किशोरियों के सहयोग से विभिन्न प्रजातियों के 80 पौधों; आम, अमरुद, नींबू, केला, जामुन, सजवन, तुलसी, नीम, पीपल, को लगाया गया और उनकी देख रेख की ज़िम्मेदारी लगाने वालों को सौंपी गई।

कार्यक्रम के माध्यम से समुदाय को जागरूक करते हुए उन्हें प्रेरित किया गया कि वे स्वयं अपने परिवार, संगी साथी के साथ मिलकर सामूहिक रूप से पर्यावरण के संरक्षण में जुट जाएँ। पेड़ न काटें, यदि काटना आवश्यक हो तो नए जरूर लगाएं, ईंधन के इस्तेमाल में सावधानी बरतें, जल के स्त्रोतों में गंदगी न प्रवाहित करें, कार्बन फुटप्रिंटस पर नजर रख उसे धीरे -धीरे समाप्त करने का प्रयास करें।पर्यावरण के संरक्षण की ज़िम्मेदारी सभी की है, स्वस्थ पर्यावरण न सिर्फ हमें स्वस्थ रखता है बल्कि आने वाली पीढ़ियों के लिए भी एक स्वस्थ पृष्ठभूमि निर्मित करता है, अतः इसके प्रति सजगता अत्यंत आवश्यक है।

यह देखना सुखद रहा कि बड़ी संख्या में लोगों ने अपने -अपने परिवारों के साथ इस कार्यक्रम में हिस्सेदारी की। सभी संदेशों को सकारात्मक भाव से ग्रहण किया और आगे बढ़कर स्वयं पर्यावरण की रक्षा का संकल्प लिया।

विश्व जनसंख्या दिवस :

10 जुलाई 2022

परिवर्तन परिसर में विश्व जनसंख्या दिवस का आयोजन किया गया जिसमें 08 पंचायतों से

150 महिलाओं, पुरुषों, किशोरों और किशोरियों की भागीदारी शामिल रही। इस वर्ष हमारा देश जनसंख्या के आंकड़ों में विश्व में पहले स्थान पर आ गया है। यह चिंतनीय है क्योंकि जनसंख्या वृद्धि सभी प्राकृतिक एवं मानव निर्मित संसाधनों पर प्रहार करते हैं और देश की अर्थव्ययवस्था को गरीबी रेखा के निकट ले जाते हैं।

अनेक तरह की गतिविधियों को शामिल करते हुए बड़े परिवार और छोटे परिवार के बीच के फर्क को दिखाया और समझाया गया। कार्यक्रम में शामिल होने वाले सदस्यों ने इन बातों को सचेत भाव से ग्रहण किया और छोटे परिवार के पक्ष में अपनी सहमति प्रकट की और अपने शब्दों में छोटे परिवार के गुणों को बताया। इसके अलावा कार्यक्रम के माध्यम से बड़े परिवार की चुनौतियों को भी सामने रखा। सदस्यों ने बड़े परिवार में किये जाने वाले समझौतों से भी सभी को रु-बरु कराया गया। कार्यक्रम में शामिल होने वाले सदस्यों ने खुलकर बताया कैसे उन्हें लगता था कि परिवार में जितने अधिक बच्चें होंगे उतनी ही घर में खुशियाँ बनी रहेंगी और भगवान का निवास घर आँगन में सदैव बना रहेगा। लेकिन आज परिस्थितियाँ बदल गईं हैं। अब वे स्वयं तो इन बातों का ध्यान रखेंगे ही, दूसरे लोग जो इन बातों से वंचित हैं उन तक भी इन जानकारियों को पहुंचाएंगे। दरअसल एक छोटा परिवार ही सुखी परिवार होता है।

इसके अतिरिक्त कार्यक्रम में किशोरियों द्वारा बढ़ती जनसंख्या पर आज की युवा पीढ़ी की सोच को सभी सदस्यों के सामने प्रस्तुत किया गया और गीत और विडियो के माध्यम से भी इसे पुख्ता ढंग से दर्शाया गया। सभी उपस्थित सदस्यों ने दिखाई जाने वाली बातों का समर्थन किया और कार्यक्रम का तत्काल प्रभाव भी देखने को मिल गया। प्रतिभागी महिलाएं सहजता से अपने आस पास की बहनों के साथ इसके बारे में चर्चा करते हुए मिलीं और झिझक तोड़ते हुए अपनी बहु-बेटियों को भी इस जानकारी से समृद्ध किया।

नारी जुटान

02 फरवरी 2023

प्रत्येक वर्ष परिवर्तन परिसर में किशोरियों एवं महिलाओं के साथ एक सुखद, हर्षोउल्लास भरे माहौल में नारी जुटान कार्यक्रम का आयोजन किया जाता है। इस कार्यक्रम का वर्ष भर से महिलाएँ इंतज़ार करती हैं। इस वर्ष 08 पंचायतों; जमापुर, नरेन्द्रपुर, चंदौली गंगौली, मियाँ भटकन, भरौली, भवराजपुर, बलिया, गडार और 46 गाँवों की कुल 690 महिलाओं और किशोरियों की उपस्थिति में नारी जुटान कार्यक्रम का सफलतापूर्वक आयोजन किया गया। इस वर्ष खासतौर से किशोरियों को आत्मनिर्भर, सशक्त, स्वतंत्र और आत्मविश्वासी बनाने पर ज़ोर दिया गया।

आसपास घटने वाली घटनाओं के गहरे अध्ययन के बाद यह संज्ञान लिया गया कि जब तक किशोरियाँ सशक्त नहीं होंगी तब तक उनके साथ आपदाएँ होती रहेंगी। इसलिए बहुत जरूरी है

कि वे अपनी झिझक तोड़, खुलकर अपनी आवाज़ उठायें, अपने अधिकारों को और अपनी ताकत को समझें और एक सुंदर भविष्य का निर्माण करें। इन्ही बातों को ध्यान में रखते हुए महीने भर से कार्यक्रम की तैयारी शुरू की गई। विचारोत्तेजक गतिविधियों, किशोरियों द्वारा प्रस्तुत नाटक, गीत, रंगमंडली टीम द्वारा प्रस्तुत गीत, बुनाई की महिलाओं द्वारा बनाई गई सामग्रियों का प्रदर्शन, उमंग से जुड़ी किशोरियों द्वारा अपने संघर्षो और चुनौतियों का प्रस्तुतीकरण सभी निरंतर अभ्यास से चमक गए और सजीव हो उठे। जब दर्शकों ने इन्हें देखा तो उन्हें यह सब कुछ अपने हाल जैसा प्रतीत हुआ। किशोरियों और अभिभावकों के सामने के इस प्रस्तुतीकरण ने डर-भय, झिझक को खत्म करने का संदेश दिया।सभी किशोरियों ने उत्साह और जोश के साथ कार्यक्रम में अपनी भूमिका निभायी। गीत संगीत और नाटकों ने एक ऐसा माहौल तैयार किया जहां सभी उपस्थित महिलाएँ और किशोरियाँ इससे गहरे जुड़ गईं। कार्यक्रम में शामिल होने वाले सदस्यों में कुछ

लोग पहली बार परिवर्तन परिसर में आये थे। परिवर्तन परिसर में सभी इकाईयों द्वारा अपने अपने कार्यक्रम का स्टाल लगाया गया था इसके अतिरिक्त इस वर्ष नरेन्द्रपुर उप डाकघर का भी स्टॉल लगाया गया जहां उपस्थित लोगों ने कई तरह की योजनाओं के संबंध में महत्त्वपूर्ण जानकारी हासिल की।

आज भी गाँव जाने पर महिलाएँ नारी जुटान कार्यक्रम के संदेश दुहराती हैं। वे आपस में बात करती हैं- "कार्यक्रम में हमें अपनी आपबीती दिखाई दे रही थी के हम ने भी अपनी बेटियों को उनकी इच्छा के विपरीत मजबूर होकर शादी के बंधनों में बाँध दिया था जहाँ से फिर वह कभी लौट कर वापस मायके की चौखट पर नही आई। जिसका आज भी हम हर दिन अफ़सोस करते हैं कि हमारी बेटी अपने माँ पिता के लिए गए गलत फैसलों की वजह से लड़ने तक के लिए जिंदा नही रही।" इस वर्ष के नारी जुटान की विचारोत्तेजक हलचल अभी भी लोगों के बीच कायम है।

हौसलों को बुलंद रखने पर, दुनिया जीती जा सकती है

यह कहानी ग्राम संथू की रहने वाली, 20 वर्षीय अंजली की कहानी है जिसने अपने दम पर अपनी पहचान बनाई और अपने संभावित लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए निरंतर प्रयास कर रही है।

अंजली से मेरी मुलाकात विश्व तंबाकू निषेध दिवस के कार्यक्रम के दौरान हुई। संथू गाँव में तंबाकू दिवस कार्यक्रम का आयोजन किया गया था जहाँ अंजली ने अपने बाकी साथियों के साथ मिलकर किशोरी गीत और नुक्कड़ नाटक का प्रस्तुतिकरण किया था। वहाँ मैंने उसके अभिनय को देखा था और मुझे उसका अभिनय बहुत पसंद आया था। मैं 2 दिनों के बाद पुनः उससे मिलने उसके गाँव गई जहाँ मैंने उसके साथ-साथ उसकी बाकी की सहेलियों को बैठा कर बात की। उनमें से कुछ किशोरियों के अभिभावकों को भी बैठक में शामिल करते हुए, किशोरी समूह का गठन करने के लिए उनसे आग्रह किया। उनके तैयार होने पर सभी की सहमति और रुची को समझते हुए शिक्षा और जीवन के लक्ष्यों पर बात हुई।

इस तरह मैं हफ्ते में एक बार उनसे मिलने जाने लगी। उसी दौरान जुलाई माह में परिवर्तन परिसर में जनसंख्या दिवस मनाया जाने वाला था। मैंने उस कार्यक्रम के लिए अंजली और उसकी सहेलियों को कार्यक्रम में भाग लेने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने भी अपनी रुचि ज़ाहिर की और कार्यक्रम में शामिल होकर सामूहिक गीत प्रस्तुत किया।यह उनका पहला प्रयास था जब उन्होंने लगभग 200 की संख्या में उपस्थित लोगों के सामने अपने कार्यक्रम को प्रस्तुत किया था। इसके बाद मैंने इन्हें पुनः 15 अगस्त के कार्यक्रम में शामिल किया और उनसे नाटक का अभ्यास करवाया। साथ ही उन्होंने किशोरी गीत भी प्रस्तुत किया। इस तरह बार-बार सभी के सामने कार्यक्रम प्रस्तुत करने से उनके अंदर की झिझक और घबराहट दूर होने लगी। महिला समाख्या के कार्यक्रमों में अब अंजली अपने साथियों के साथ मिलकर बढ़चढ़ कर भाग लेने लगी। उसका हौसला बढ़ने लगा और वह सहजता से नाटक, गीत आदि में भाग लेने लगी।

मैंने समूह बैठक के दौरान अंजली को प्रोत्साहित किया की वह संगीत क्लास में नामांकन करवाए और लगातार इसके अभ्यास से जुड़ी रहे ताकि उसकी आवाज़ और बेहतर हो सके। एक सप्ताह बाद अंजली ने मुझे फोन करके बताया कि उसने नरेन्द्रपुर में संगीत क्लास में दाखिला ले लिया है। अब उसकी आवाज़ और भी खुलने लगी थी और वह भी काफी ध्यान लगा कर संगीत सीखने लगी। उसके संगीत क्लास में जाने से बाकी लड़कियों में भी हिम्मत आने लगी। अंजली के माता पिता ने भी उसको सहयोग किया और अंजली का मनोबल बढ़ाया, यह और सुंदर बात थी।

महिला समाख्या के कार्यक्रम नारी जुटान में अंजली ने "*मैया रे हमार का कसूर*" में मुख्य रोल निभाया जिसे देख दर्शकों की आँखों में आँसू आ गए। इस तरह धीरे धीरे अंजली में आत्मविश्वास ने जन्म लिया और आज वह किसी के भी सामने तर्क कर सकती है, खुलकर अपनी बात रख सकती है और अपने साथियों को सहजता से मार्गदर्शन दे सकती है। उसे आज अपने जीवन का लक्ष्य मिल गया है जिसे पाने में वह निरंतर लगी हुई है। उसका कहना है - *"मैं पहले सिर्फ जीवन जी रही थी परन्तु अब मेरे जीवन को एक दिशा मिल चुकी है जिसमें सफलता हासिल करना अब मेरा मकसद बन गया है।"*

-तमन्ना परवीन,
समन्वयक जागृति महिला समाख्या

आजीविका

परिवर्तन अपने कार्यक्षेत्र की महिलाओं एवं किशोरियों को रोज़गार से जोड़ उन्हें आर्थिक और सामाजिक रूप से सक्षम बनाने के कार्य में संलग्न है। क्षेत्र की महिलाओं में कताई, बिनाई, सिलाई एवं शिल्पकारी का कौशल प्रशिक्षण करते हुए परिवर्तन की यह इकाई रोज़गार के अवसर भी उपलब्ध कराती है। इसके अतिरिक्त क्षेत्र में लुप्त हो गए हथकरघा उद्योग को यह पुनर्जीवित और संरक्षित करने में जुटी हुई है जिससे क्षेत्र की पुरानी प्रतिष्ठा लौटे और प्राकृतिक,जैविक कपड़ों से लोगों का संबंध दोबारा कायम हो।

बुनकरी

यह उप-इकाई क्षेत्र की महिलाओं और किशोरियों को बुनकरी के कौशल में प्रशिक्षित कर उन्हें समुचित रोज़गार उपलब्ध करवाती है। पूर्व में, बिहार के इस क्षेत्र में हथकरघा बुनकरी की समृद्ध परंपरा रही थी जो सस्ते मिल के कपड़ों की बाज़ार में अति उपलब्धता की वजह से मरणास्सन हो गई। आर्थिक विपन्नता झेलते हुए बुनकर अन्यत्र प्रदेशों में रोज़गार की तलाश में निकल गए। इस चिंताजनक स्थिति को संबोधित करने और हथकरघा की सुदीर्घ यशस्वी परंपरा को पुनर्जीवित करने के उद्देश्य से परिवर्तन ने क्षेत्र में के हथकरघा केंद्र-जमालहाता को प्रोत्साहित किया है और परिसर में हथकरघों को स्थापित किया है।

जमालहाता
परिवर्तन परिसर

इस सत्र में परिवर्तन स्थित बुनकरी इकाई से 27 गाँवों से आने वाले बुनकरों का जुड़ाव रहा। बुनकरों ने अपने बुनकर मास्टर के साथ नवीन डिज़ाइनों एवं ताना-बाना के साथ सुंदर प्रयोग किए। ज़री के धागों के साथ साड़ियाँ बीनी गईं जो चुनौतीपूर्ण तो थीं लेकिन उनके परिणाम अद्भुत निकले। ये साड़ियाँ अति प्रशंसित हो रही हैं।

इसके अतिरिक्त बुनकरी इकाई में ट्रैक सूट बनाने की नई मशीन लगाई गई है, जो क्षेत्र में कौतूहल एवं चर्चा का विषय है। इससे पहले यह मशीन दिल्ली, पंजाब, हरियाणा,एवं कोलकाता जैसे शहरों में थीं। समुचित प्रशिक्षण के बाद महिलाओं एवं किशोरियाँ द्वारा इस मशीन पर अब ट्रैक सूट तैयार होने शुरु हो गए हैं जो सभी के लिए उत्साहजनक है।

सिलाई

सिलाई इकाई, परिवर्तन में बिने और काते गए कपड़ों को ऑर्डर, माँग, और आवश्यकता अनुसार तैयार करती है। सिलाई इकाई मुख्य रूप से तक्षशिला एजुकेशनल सोसाइटी के 4 दिल्ली पब्लिक स्कूलों के बच्चों की स्कूली पोशाक (यूनिफॉर्म) तैयार करती है। इसके अतिरिक्त वह भेंट देने के लिए पुरुषों और महिलाओं के कुरते पायजामे भी तैयार करती है।इस वर्ष इस इकाई ने कतरन अर्थात वेस्ट कपड़ों से, बन्टिंग, कोस्टर, फ्लावर्स एवं पैचवर्क पैटर्न चेन्नई से आईं विशिष्ट प्रशिक्षक प्रियांजलि से सीखे और बाज़ार के लिए तैयार किए। यहाँ तैयार किए गए खादी के बैग्स भी बहुत लोकप्रिय हैं इतने कि कई बार उनकी मांग अनुरूप आपूर्ति नहीं हो पाती है।

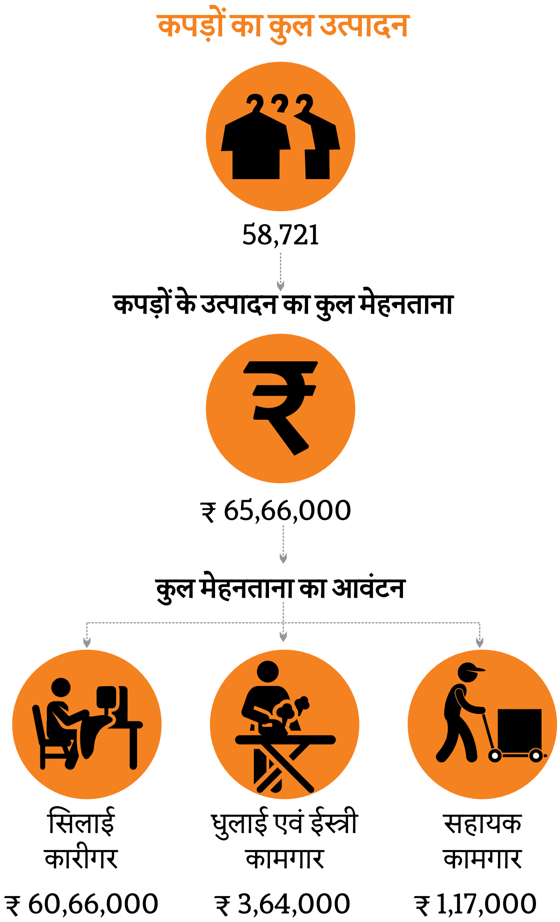

रंगीन BIHAR

लाभार्थी

37 महिला कारीगर

कार्यक्षेत्र

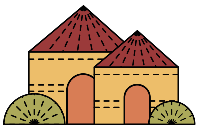

13 गाँव

उत्पाद

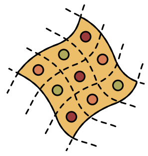

11,454 मीटर
6819 मी. कुरता 3540 मी. साड़ी
1094 मी. दुपट्टे

कुल मेहनताना

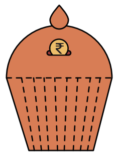

₹ 17,00,000

लाभान्वित गाँव

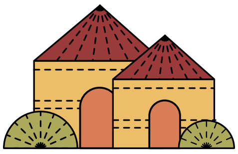

4

लाभान्वित व्यक्ति

4

उत्पादित सामान

विभिन्न प्रकार के थैले

कुल मेहनताना

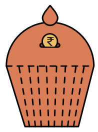

₹ 1,55,805

हुनर हासिल हो जाए तो स्वालंबन दूर नहीं

यह कहानी एक ऐसी लड़की की है जिसने अपनी काबलियत से घर तथा समाज में अपना एक स्थान बनाया।

-आराधना कुमारी, सबरंगी सिलाई सदस्य

अराधना कुमारी, बड़हुलिया प्रखंड जीरादेई सिवान की रहने वाली हैं। इनके परिवार में इनके माता-पिता, 2 भाई तथा 3 बहनें हैं। बचपन से ही इन्होंने देखा कि इनके पिता जी ने ही पूरे घर की ज़िम्मेदारी अपने कन्धों पर उठा रखी है। अतः प्राथमिक शिक्षा पूरी हो जाने के बाद इन्होने माध्यमिक शिक्षा के साथ ही साथ घर पर ही सिलाई का कार्य शुरू कर दिया। गाँव की महिलाओं द्वारा इन्हें परिवर्तन के बारे में जानकारी हुई कि यहाँ सिलाई, कढ़ाई, बुनाई आदि कार्य किए जाते हैं। चूंकि इनका लगाव सिलाई से था तो ये परिवर्तन की सिलाई इकाई से 2021 में जुड़ गईं।आज आराधना परिवर्तन में सिलाई से जुड़कर बखूबी कार्य कर रही हैं। सिलाई के तौर तरीकों में बदलाव करके इन्होंने एक उन्नत कारीगर का मुकाम हासिल कर लिया है।

आराधना अपनी सफलता की कहानी को बताते हुए कहती हैं-*"मैं हर साल जानकारी के आभाव में परंपरागत रूप से सिलाई कर रही थी लेकिन अब परिवर्तन से जुड़कर और प्रशिक्षण पाकर, मैं बेहतरीन सिलाई तथा कढ़ाई करने के लिए कड़ी से कड़ी मेहनत करती हूँ। मैं 2021 से परिवर्तन में सिलाई का काम कर रही हूँ और मैंने इतने दिनों में तक्षशिला बैग, सबरंगी बैग, आर.आई.पी. बैग, लैपटॉप बैग तथा मोबाइल बैग बनाना सीखा है जिसमें मझे आर.आई.पी. बैग बनाना बेहद पसंद आया। इसके बाद मेरी मुलाकात परिवर्तन में आई प्रियंजलि मैम से हुइ जिन्होंने मुझे वेस्ट रद्दी कपड़ों से नये-नये प्रोडक्ट बनाने का हुनर सिखाया। हमने बंटिंग, कोस्टर, फ्लावर्स, पैचवर्क को बनाना सीखा। साथ ही उनसे कशीदाकारी (हैन्ड एम्ब्रॉइडरी) के नये तरीकों को भी सीखा। परिवर्तन से जुड़कर जो मैंने सिलाई की नई तकनीकों को सीखा उससे मेरे अंदर नई ऊर्जा आई और मैं दुगुने उत्साह काम करती हूँ। भविष्य के प्रति भी बेहद आशान्वित रहती हूँ। परिवर्तन को इन सभी बातों के लिए मैं धन्यवाद कहती हूँ।"*

हथकरघा दिवस

7 अगस्त 2022

हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी राष्ट्रीय हथकरघा दिवस परिवर्तन परिसर में उल्लास के साथ मनाया गया। यह दिवस, हथकरघा के महत्त्व पर रोशनी डालने और बुनकरों के योगदान का अभिनंदन करने के लिए पूरे देश में मनाया जाता है। परिवर्तन स्थित बिनाई, कताई तथा सिलाई इकाई में काम करने वाली महिलाएँ एवं किशोरियाँ इस कौशल के महत्त्व से परिवर्तन आने से पहले अनजान थीं। परिवर्तन में सुविचारित प्रशिक्षण के बाद उन्होंने आज ऐसा कौशल अर्जित कर लिया है कि अब देश विदेश में उनके बनाये उत्पादों की बिक्री एवं चर्चा हो रही है। हथकरघा के इस महत्त्व का उत्सव मनाने लगभग 100 लोग सभागार में इकट्ठा हुए।

श्री राजवर्धन एवं श्री गौरव ने सुंदर सा मंच सृजित किया और श्री सुकेश ने परिवर्तन परिसर में तैयार होने वाले कपड़े की कहानी को प्रदर्शित किया- कैसे रुई से कपड़े तक का सफर संभव होता है। इस सुसज्जित मंच का संचालन सुश्री वंदना कर रही थीं।

कार्यक्रम की शुरुआत दीप प्रज्ज्वलन के साथ हुई। दीप प्रज्जवलन में परिवर्तन से श्री आलो, श्री दिग्विजय, श्री सुधीर एवं श्री सुकेश मास्टर के साथ- साथ जमालहाता से आये मास्टर बुनकर श्री रियाज भी शामिल हुए। रंगमंडली के साथियों ने सभी बुनकरों के लिए स्वागत गान *"शुभ्र धवल वस्त्र बुनो"* गाया। स्वागत गान के बाद बिनाई के उत्पादन समन्वयक श्री दिग्विजय द्वारा हथकरघा दिवस के बारे में और बुनकरों के मौलिक अधिकारों, बुनकर सेवा केंद्र, जिला उद्योग केंद्र एवं बुनकरों को सरकार द्वारा दी जाने वाली सुविधाओं के बारे में विस्तार से बताया।

श्री दिग्विजय की बात को आगे बढ़ाते हुए, जमालहाता से आये डॉ. तौफीक अंसारी द्वारा कपड़े की बिनाई में लगातार आ रहे बदलावों के बारे में चर्चा की गई- कैसे चुनौतियों को झेलते हुए आज बुनकर एक सम्मानित मुकाम तक पहुँचे हैं और प्रेरणा स्त्रोत की तरह आने वाली पीढ़ियों को रोशनी दिखा रहे हैं- इस बात को श्री अंसारी द्वारा विशेषतया रेखांकित किया गया। इसके उपरांत बुनाई की महिलाओं एवं रंगमंडली सदस्यों क्रमशः कमल कुमारी, गुड़िया कुमारी, कविता कुमारी, वंदना कुमारी, सबिता देवी, फूलमाला देवी एवं रिंकू देवी द्वारा *"चरखा के टूटे ना तार"* की प्रस्तुति दी गई जिसे सभी उपस्थित लोगों ने खूब सराहा।

सबरंगी के मास्टर श्री सुधीर ने अपना कार्य अनुभव और सबरंगी तक की अपनी यात्रा को सभी उपस्थित लोगों के साथ साझा किया। उनका कहना था कि अपने भीतर की प्रबल इच्छा और उसके लिए वांछित मेहनत करके ही हम अपने लक्ष्य तक पहुँच सकते हैं। उनके प्रेरक शब्दों के बाद श्री सुधीर ने बिनाई की प्रक्रिया और हैन्डलूम कपड़े की विशिष्टता के बारे में सघन चर्चा की। अंत में रंगमंडली के सदस्यों ने समापन गीत "*हमको गाढ़ा स्वदेशी मँगा दे पिया*" प्रस्तुत किया। श्री सुधीर के भावभीने धन्यवाद ज्ञापन के बाद कार्यक्रम समाप्त हुआ।

"बुनकरों और उनके परिवार के सदस्यों की प्रतिक्रिया हौसला बढ़ाने वाली थी। न सिर्फ वे कार्यक्रम से आनंदित हुए बल्कि परिवर्तन द्वारा दिए गए आजीविका के इस अवसर को ले वे सुरक्षित महसूस कर रहे थे- ऐसा उन्होंने कहा।

बिहार शिक्षा परियोजना सिवान चहक

परिवर्तन ने बतौर उत्प्रेरक बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान (FLN) कार्यक्रम के अंतर्गत स्कूल रेडीनेस मॉडल्स चहक के कार्य हेतु विद्यालय प्रधान एवं नामित शिक्षकों का प्रशिक्षण सुनिश्चित किया। इस कार्यक्रम के आयाम हैं - शारीरिक विकास, भाषा विकास, संख्या ज्ञान, पर्यावरण ज्ञान, सामाजिक एव भावनात्मक विकास।

कार्यक्रम के अंतर्गत स्थानीय प्रयोग की वस्तुओं से गिनती सिखाना-मुख्यतया आलू की गिनती, उल्टे हाथ से लिखने का प्रयास, एवं बारिश की आवाज़ से गिनती सिखाई गई। इस गतिविधि के दौरान ताली बजवाई गई, जिसमें सबसे पहले एक ऊँगली से फिर दो ऊँगली से फिर तीन ऊँगली से ताली बजाने के दौरान बारिश की बूँदों को महसूस किया गया।

कविता *पहाड़ी का पेड़*, का हाव - भाव के साथ पाठ कराया गया तथा *नानी आई-नानी आई*, से 6 तक गिनती सिखाई गई।

अगले दिन, आकृति बनाना सिखाया गया। इस गतिविधि के माध्यम से बच्चों को चित्र के माध्यम से अलग-अलग वस्तुओं की जानकारी मिली तथा बहुत से शब्द बच्चे बना पाए जैसे - फूल, कुर्सी, चिड़िया, गेंद। यह बच्चों को बहुत मज़ेदार लगा। बच्चों की मनःस्थिति, शब्दों, आचरण एवं घटनाओं के उनपर प्रभाव को वीडिओ के माध्यम से दिखलाया गया। यह शिक्षकों के लिए अत्यंत लाभकारी था। तत्पश्चात, *एक बड़े राजा की बेटी, दो दिन से बीमार पड़ी*, कविता के माध्यम से दस तक गिनती बताई गई। तथा कविता को हाव – भाव से बताया गया। आपसी समन्वय एव शारिरिक क्षमता का विकास एवं स्मरण शक्ति के विकास के लिए भी गतिविधियाँ करवाई गईं।

इसी तरह तीसरे और चौथे दिन, दिशा के ज्ञान को *पूरब में सूरज उगे, पश्चिम में चन्द्रमा डूबे उत्तर में हिमालय पर्वत, दक्षिण में हिन्द महासागर*, रोचक कविता द्वारा समझाया गया और बोलने की क्षमता का अभ्यास करवाया गया। ध्यान से देखने का अभ्यास, शारीरिक क्षमता के लिए योगाभ्यास, साफ-सफाई एवं दिनचर्या में सकारात्मक बदलाव को भी कविता के माध्यम से बखूबी समझाया गया।

क्षेत्र के शिक्षकों लिए चहक कार्यशाला अत्यंत मूल्यवान रही।

टीम की ओर से संदेश

गाँव में परिवर्तन

भारत की आत्मा गाँवों में बसती है यह कथन महात्मा गाँधी जी का है। यह सच है कि हमारी ग्रामीण अर्थव्यवस्था, हमारे देश की समग्र प्रगति और समावेशी विकास की कुंजी है इसीलिए गाँवों के विकास के बिना देश के सम्पूर्ण विकास की कल्पना निरर्थक है।

परिवर्तन के संस्थापक श्री संजीव कुमार का गाँव से विशेष लगाव रहा है। वे गाँधी जी के विचारों से भी प्रेरित रहे हैं। उसी प्रेरणा की देन है परिवर्तन संस्था। परिवर्तन संस्था की स्थापना, गाँव नरेन्द्रपुर, जिला सिवान, बिहार में हुई है। संस्था गाँव के बुनियादी ढांचे को मजबूत करने और हाशिए पर रह रहे लोगों के सर्वांगीण विकास के लिए सतत प्रयत्नशील है। लोगों की ज़रूरतों को ध्यान में रखते हुए, विभिन्न कार्यक्रमों के माध्यम से लोगों का सहयोग कर, यह संस्था एक उत्प्रेरक की तरह समेकित ग्रामीण विकास के लिए काम करती है।संस्था एकल रूप से कार्य नहीं करती है और यहाँ इसकी सबसे बड़ी ख़ासियत है। यह स्थानीय विकास के मुद्दों के समाधान और कार्यक्रमों के बेहतर रूप देने के लिए अन्य संस्थाओं और विशेषज्ञों की मदद लेकर समसमायिक बैठकों का आयोजन करती है जिससे समुदाय के सभी ज़रूरतमंदों तक वह अपने संसाधनों को पहुँचा पाए।

संस्था की कृषि इकाई-*हरियाली कृषि ज्ञान केंद्र* की पीठिका से किसानों को खेती की आधुनिक नई तकनीकी जानकारी प्रदान करती है। केंद्र, कृषि साहित्य का प्रसार करता है, किसान मेले लगाकर उन्नत खाद, बीज, तकनीक, उपकरण की उपलब्धता सुनिश्चित करता है और पोषण वाटिका लगाने में मदद करता है। महिला किसानों की विशेष देख रेख करते हुए यह उनके आर्थिक एवं सामाजिक सशक्तिकरण की नींव रखता है।

मेरा बचपन और प्राम्भिक शिक्षा गाँव में हुई। जिससे प्रकृति और खेती से विशेष जुड़ाव हमेशा बना रहा। इसी कारण मैंने कृषि के क्षेत्र में शिक्षा ग्रहण की और वर्ष 2019 में, मैं परिवर्तन संस्था से कृषि फैसिलिटेटर के रूप में जुड़ गया। संस्था से इस रूप में जुड़ना मेरे लिए काफी सुखद था क्योंकि मुझे इसके माध्यम से ज़मीनी स्तर पर ज़रूरतमंद लोगों के साथ जुड़ कर कृषि के क्षेत्र में काम करने का मौका मिला।

कृषि, गाँव का मुख्य व्यवसाय है। अतः मेरा मानना है कि ग्रामीण समुदाय के लोगों का सामाजिक, और आर्थिक रूप से विकास तभी होगा जब खेती को और अधिक लाभकारी बना दिया जाये। हाशिये पर रह रहे लोगों के उत्थान के लिए परिवर्तन ने उपलब्ध संसाधनों को एक समान रूप से वितरित करते हुए कृषि के क्षेत्र में बड़ी पहल की है।

मैं हरियाली कृषि ज्ञान केंद्र से जुड़ने के बाद किसानों के साथ साझेदारी की रणनीति के साथ आगे बढ़ रहा हूँ और क्षेत्र में स्पष्ट बदलाव महसूस कर रहा हूँ। अब किसान परंपरागत खेती में बदलाव कर, नगदी फसल, पोषण युक्त फसल और आधुनिक फसल पद्दति को अपना रहे हैं। आज वे जलवायु परिवर्तन से होने वाले मौसमी बदलाव को भी समझने लगे हैं और प्राकृतिक संसाधनों का समुचित संरक्षण के साथ उपयोग करने लगे हैं। इसके साथ ही रासायनिक उर्वरकों पर उनकी निर्भरता कम हुई है। हरियाली कृषि ज्ञान केंद्र के हस्तक्षेप से *किसान सेवा केंद्र* की स्थापना होने के बाद से सहकारिता को बढ़ावा मिला है। आज किसान अपने आवश्यक कृषि इनपुट उपलब्ध कराते हैं और उचित मूल्य और सही

कृषि इनपुट का लाभ प्राप्त करते हैं। किसानों द्वारा वैज्ञानिक पद्धतियों को अपनाने से खेती में आने वाली चुनौतियों में कमी आई है। किसान को कम लागत में अधिक उत्पादन प्रत्यक्ष रूप से प्राप्त होने लगा है। इस प्रकार कृषि के विकास के साथ- साथ ग्राम विकास की भी गति बढ़ी है। स्वच्छ और स्वस्थ वातावरण में स्थित परिवर्तन परिसर में पूरी टीम का समय-समय पर प्रशिक्षण एवं उत्साहवर्धन किया जाता है, जिससे अपने अब तक के किए गए कामों का परीक्षण होता रहे और भविष्य के लिए योजनाएँ और रणनीति तैयार की जाए। इससे सभी संचालकों को आत्मपरिक्षण का अवसर मिलता है और आवश्यकता अनुसार नई रणनीतियाँ तैयार करने का प्रयास किया जाता है।

मुझे परिवर्तन से जुड़ने पर बिहार के प्रमुख कृषि संस्थानों में जाने का मौका मिला जहाँ से कृषि के क्षेत्र में चल रहे अनुसन्धान और विकसित खेती की नयी तकनीकों को जानने और सीखने का अनमोल मौका मिला। इन संस्थानों से मैं जो भी सीखता हूँ उसे अपने कार्यो में व्यावहारिक रूप से उतारने की कोशिश करता हूँ जिससे मेरे सीखे का किसानों को अधिक लाभ मिल पाए।

मुझे यहाँ पर कार्य करने के दौरान समुदाय की ज़मीनी स्तर की वास्तविक समस्याओं और चुनौतियों से अवगत होने का मौका मिला, जिसके समाधान और उपायों पर मेरी समझ और विकसित हुई है। इस विकसित समझ के साथ परिवर्तन की समेकित ग्रामीण विकास की सोच को ले मैं आगे बढ़ रहा हूँ और भविष्य में कृषि क्षेत्र में और बेहतर काम कर सकूँ इसके लिए प्रयासरत हूँ।

विवेक कुशवाहा
कृषि संचालक परिवर्तन

परिवर्तन के प्रकाशन

परिवर्तन प्रत्येक वर्ष विभिन्न इकाइयों से संबंधित, जानकारी से युक्त, रोचक पत्रिकाओं को प्रकाशित करता है, जिसे समुदाय में लोग चाव से पढ़ते हैं। कोरोना की बंदी ने इन पत्रिकाओं का प्रकाशन बाधित कर दिया था। इसीलिए बतौर विकल्प इन पत्रिकाओं का डिजिटल संस्करण तैयार कर इन्हें प्रकाशित किया गया और इस असाधारण समय में भी इन्हें लोगों का भरपूर प्यार मिला। अब हम दोनों संस्करण प्रकाशित करते हैं।

हमार अँगना

यह बालघर आँगन द्वारा प्रकाशित, अर्धवार्षिक पत्रिका है जिसमें शिक्षा की इस उप इकाई में की जाने वाली सभी गतिविधियों, कार्यक्रमों, चुनौतियों और सफलताओं के बारे में लिखा जाता है। यह पत्रिका खासतौर से सेविकाओं, सहायिकाओं और माताओं के लिए अत्यंत उपयोगी है।

चहकने की ललक

यह छोटे बच्चों की पत्रिका है। यह पत्रिका बच्चों के ही बनाए गए चित्रों, लेखों और चुटकुलों से तैयार होती है। बच्चे हर महीने परिवर्तन द्वारा आयोजित कार्यशाला में भाग लेते हैं, जहाँ उन्हें विषयों के आधार पर पत्रिका के लिए अपनी स्वेच्छा से कुछ रचनात्मक गढ़ने के लिए कहा जाता है। इसके बाद कार्यशाला में से चयनित कृतियों एवं बच्चों के लेखों को बाल अख़बार का स्वरुप दिया जाता है। बाद में इसे डिजिटल सॉफ्ट कॉपी के रूप में प्रकाशित किया जाता है।

कृषि सन्देश

यह परिवर्तन स्थित कृषि इकाई - हरियाली कृषि ज्ञान केंद्र की वार्षिक पत्रिका है। इस पत्रिका के माध्यम से लोगों को इस इकाई के साल भर के कामों, चुनौतियों और सफलताओं के बारे में बताया जाता है। यह किसानों के लिए अत्यंत उपयोगी पत्रिका है।

परिवर्तन पत्रिका

यह परिवर्तन की मासिक पत्रिका है। इसमें परिवर्तन के मासिक कार्यक्रमों का सार प्रकाशित किया जाता है- जिसे समुदाय के सभी लोग चाव से पढ़ते हैं और उससे संबध अपने सुझाव भी प्रेषित करते हैं।

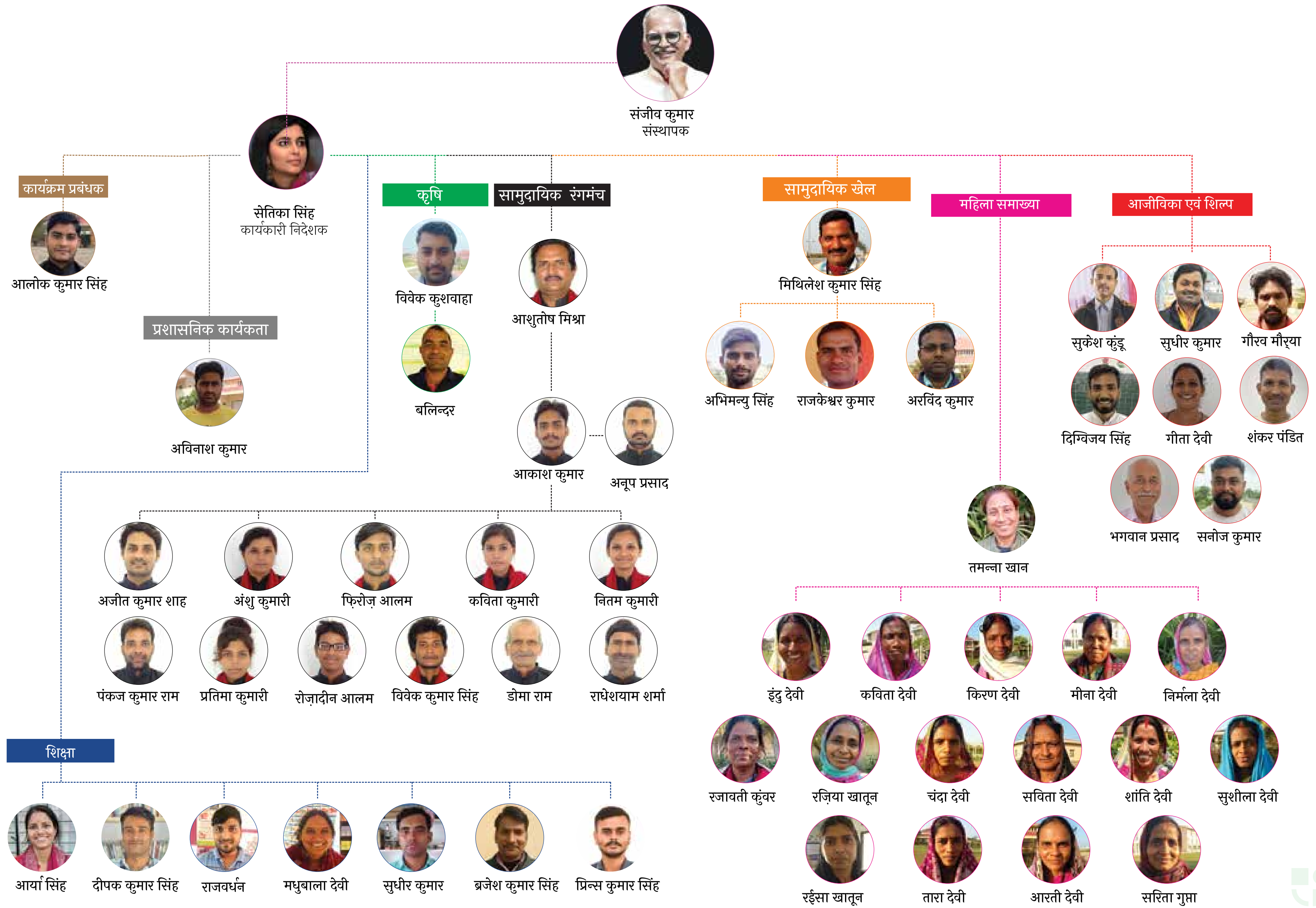
संजीव कुमार
संस्थापक
सेतिका सिंह
कार्यकारी निदेशक
कार्यक्रम प्रबंधक
आलोक कुमार सिंह
प्रशासनिक कार्यकता
अविनाश कुमार
कृषि
विवेक कुशवाहा
बलिन्दर
सामुदायिक रंगमंच
आशुतोष मिश्रा
आकाश कुमार
अनूप प्रसाद
अजीत कुमार शाह
अंशु कुमारी
फ़िरोज़ आलम
कविता कुमारी
नितम कुमारी
पंकज कुमार राम
प्रतिमा कुमारी
रोज़ादीन आलम
विवेक कुमार सिंह
डोमा राम
राधेश्याम शर्मा
शिक्षा
आर्या सिंह
दीपक कुमार सिंह
राजवर्धन
मधुबाला देवी
सुधीर कुमार
ब्रजेश कुमार सिंह
प्रिन्स कुमार सिंह
सामुदायिक खेल
मिथिलेश कुमार सिंह
अभिमन्यु सिंह
राजकेश्वर कुमार
अरविंद कुमार
महिला समाख्या
तमन्ना खान
इंदु देवी
कविता देवी
किरण देवी
मीना देवी
निर्मला देवी
रजावती कुंवर
रज़िया खातून
चंदा देवी
सविता देवी
शांति देवी
सुशीला देवी
रईसा खातून
तारा देवी
आरती देवी
सरिता गुप्ता
आजीविका एवं शिल्प
सुकेश कुंडू
सुधीर कुमार
गौरव मौर्या
दिग्विजय सिंह
गीता देवी
शंकर पंडित
भगवान प्रसाद
सनोज कुमार

TAKSHILA तक्षशिला

ARTHSHILA Takshila's Collective for the Arts

EKTARA इकतारा

पटना। पुणे। लुधियाना। कोयम्बटूर

पिछले 23 वर्षों से तक्षशिला संस्थान, सामाजिक समानता, समरसता एवं विकास के ध्येय को ले अपने कार्यों को संचालित कर रहा है। शिक्षा, कला, साहित्य एवं ग्रामीण विकास की पहल हेतु चार विद्यालयों-डीपीएस पटना-बिहार, डीपीएस पुणे-महाराष्ट्र, डीपीएस लुधियाना-पंजाब एवं डीपीएस कोयम्बटूर-तमिलनाडु की स्थापना हुई है और भारतीय भाषाओं, विशेषकर हिंदी के उत्कृष्ट बाल साहित्य को प्रकाशित एवं प्रोत्साहित करने हेतु भोपाल-मध्यप्रदेश में इकतारा की स्थापना हुई है। प्लूटो, साइकिल एवं ऑर्बिट यहाँ से प्रकाशित होनेवाली बच्चों की लोकप्रिय साहित्यिक पत्रिकाएं हैं। कला एवं डिजाइन को समर्पित तक्षशिला के 2 नए संस्थान-अर्थशिला सेंटर फॉर आर्ट, शान्तिनिकेतन, पश्चिम बंगाल एवं अर्थशिला सेंटर फॉर आर्ट, अहमदाबाद, गुजरात,2022 में कला रसिकों के लिए खुल गए हैं। इसी कड़ी में 2023 में -अर्थशिला-पटना, बिहार एवं अर्थशिला सेंटर फॉर आर्ट, ओखला, नई दिल्ली कला रसिकों के लिए उपलब्ध हो जाएँगे।

परिवर्तन, तक्षशिला की समेकित ग्रामीण विकास पहल है।

गाँव और पोस्ट ऑफिस नरेन्द्रपुर, ब्लॉक जीरादेई, सिवान 841 446, बिहार (भारत)
ई मेल : info@parivartanbihar.org। दूरभाष : +91 84341 70118
मुख्य कार्यालय
सी–404, डिफेन्स कॉलोनी, नई दिल्ली 110 024। दूरभाष : +91 11 4155 5418/5428

/parivartanbihar /parivartanbihar /ParivartanBihar www.parivartanbihar.org